Chap-3

:: तृतीय अध्याय ::

: "राग दरबारी" उपन्यास की भाषिक-संरचना :

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M. S. University of Baroda

:: तृतीय अध्याय ::

: "राग दरबारी" उपन्यास की भाषिक-संरचना :

प्रास्ताविक :

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मुझे तीन उपन्यासों की "भाषिक संरचना" को व्याख्यायित करना है। ये तीन उपन्यास हैं-"राग दरबारी" (श्रीलाल शुक्ल,1968), "मुझे चाँद चाहिए" (सुरेन्द्र वर्मा, 1993) और "काशी का अस्सी" (डॉ.काशीनाथ सिंह, 2002)। अत: काल-क्रमिकता की दृष्टि से प्रथम दो उपन्यास बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के है और तीसरा उपन्यास इक्कसवीं शताब्दी के प्रथम दशक का है। यह काल-क्रमिकता उनके प्रकाशन के हिसाब से है। उपन्यास में निरूपित काल कुछ अलग-अलग हैं। "राग दरबारी" में आज़ादी के बाद के मोहभगं की स्थिति को रूपायित किया गया है। अत: उसमें निरूपित काल 1947 से लेकर 1965-66 तक का रहा होगा। "मुझे चाँद चाहिए" में भी स्वाधीनता के बाद के समय को लिया गया है। उसका रचना-काल सन 1993 का है, अत: निश्चयत: उसमे बीसवी^ शताब्दी के नौवे दशक के अंत तक (1990) के समय को निरूपित किया गया है।लेखक ने उपन्यास के अंत भाग में टी.वी. पर धारावाहिकों के शुरू होने का जिक्र किया है। "काशी का अस्सी" में भी बीसवीं शताब्दी के अंत तक की घटनाओं को समेटा गया है। प्रस्तुत अध्याय में मेरा उपक्रम आलोच्य उपन्यासो में प्रथम ऐसे "राग-दरबारी" उपन्यास की भाषिक-संरचना को स्पष्ट करने का रहेगा। "भाषिक संरचना" से मेरा क्या तात्पर्य है, उसे प्रथम अध्याय में बताया जा चुका है। अत: वहां निरूपित मुद्दों के संदर्भ में "राग दरबारी" की भाषा को खंगालने का काम यहां रहेगा।

चरित्र-सृष्टि और भाषिक-संरचना :

भाषा और चरित्र का चोली-दामन का साथ होता है। चरित्र में व्यक्ति की शिक्षा, सोच, संस्कार, परवरिश, मित्र-वर्तुल आदि कई आयाम होते हैं और उनके आधार पर पात्र के चरित्र का निर्माण होता है। चरित्र की अभिव्यक्ति में भाषा का बहुत बड़ा योग है। व्यक्ति जब तक मौन रहे, तब तक ठीक है, पर जैसे ही वह कुछ बोलता है उसकी भाषा के द्वारा उसका चरित्र प्रकट हो जाता है। इक काठियावाडी दुहा इस संदर्भ मे उद्धरणीय रहेगा-

"कोयलडी ने काग, वाने वरताये नहीं।
एनो जीभलडीए जवाब, साचुं सोरठियो भणे।"[1]

"राग दरबारी" उपन्यास में तो कई पात्र हैं। अत: "भात-पतीली" न्याय से हम दो-तीन चरित्रों की ही बात करेंगे। एक उपन्यास के प्रारंभ में ही लेखक ने रंगनाथ का कैरिकेचर इन शब्दो में खींचा है- "अहा! क्या हुलिया था। नवकंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारूणम! पैर खद्दरके पैजामे में, सिर खद्दर की टोपी में, बदन खद्दर के कुर्ते में! कन्धे से लटकता हुआ भूदानीझोला। हाथ में चमडे की अटैची। ड्राइवरने उसे देखा और देखता ही रह गया।"[2] यहाँ पर लेखक रंगनाथबाबू के विचित्र हुलिये की द्वारा उनका व्यंग्य-चित्र अंकित करते है। चेहरा पिलपिला और बेनूर है इसीलिए व्यंग्य मे उसे 'अरूण' कहा गया है। आजादी के बाद का वह समय। युनिवर्सिटी का छात्र एम. ए. होते ही चमडे की अटैची ले लेता था। खद्दर के कपडे भी तब चलन में थे। भूदानी झोला भी प्राय: शिक्षित युवक धारण कर लेते थे रंगनाथ कितना भीरू और डरपोक किस्म का है, यह तो उसके इस वाक्य से ही व्यंजित हो जाता है : ड्राइवर साहब, तुम्हारा गियर तो बिल्कुल अपने देश की हुकूमत जैसा है।[3] यहां पर वह वह ड्राइवर को भी 'साहब' कहता है।

और देखिए 'राग दरबारी' के सनीचर का चित्र जो बाद में गांव के सरपंच भी चुन लिये जाते है: "एक दुबला-पतला आदमी गन्दी बनियान और धारीदार अण्डरवियर पहने बैठा था। नवम्बर का महीना था और शाम को काफ़ी ठण्डक हो चली थी, पर वह बनियान में काफ़ी खुश नजर आ रहा था। उसका नाम मंगल था,

पर लोग उसे सनीचर कहते थे। उसके बाल पकने लगे थे और आगे के दाँत गिर गये थे। उसका पेशा वैधजी की बैठक पर बैठै रहना था। वह ज्यादातर अण्डरवेयर ही पहनता था। उसे आज बनियान पहने हुए देखकर रूप्पनबाबू समझ गये कि सनीचर 'फ़ार्मल' होना चाहता है।"[4] वस्तुत: 'शनिचर' होना चाहिए, पर हिन्दी की पूर्व-पट्टी मे 'श' के स्थान पर 'स' का ही प्रयोग होता है। ऊपर सनीचर का कैरिकेचर जिन शब्दों से खींचा गया है उससे ही उसका cयक्तित्व व चरित्र प्रकट होता है।

तीसरे चरित्र के रूप में हम वैधजी को लेते है। यथा हर बडे राजनीतिज्ञ की तरह वे राजनीति से नफ़रत करते थे और राजनीतिज्ञों का मजाक उड़ाते थे। "गांधी की तरह अपनी राजनीतिक पार्टी में उन्होंने कोई पद नहीं लिया था क्योंकि वे वहां नये खून को प्रोत्साहित करना चाहते थे, पर कोओपरेटिव और कालेज के मामलों में लोगों ने उनको मजबूर कर दिया और उन्होंने मजबूर होना स्वीकार कर लिया था।... उनकी राय में ब्रह्मचर्य न रखने से सबसे बड़ा हर्ज यह होता था कि आदमी बाद में चाहने पर भी ब्रह्मचर्य का नाश करने लायक नहीं रह जाता था। संक्षेप में उनकी राय थी कि ब्रह्मचर्य का नाश कर सकने के लिए ब्रह्मचर्य का नाश न होने देना चाहिए।"[5] उपर्युक्त शब्दों में वैधजी के 'Shrewal' शातिर व्यक्तित्क का चित्रण हुआ है।

बद्री पहलवान वैधजी के सुपुत्र है। जिस तरह वैधजी हर पहलू का विचार ब्रह्मचर्य की फिलोसोफ़ी से करते है, उसीतरह बद्री पहलवान हमेशा पहलवानी की भाषा में ही बात करते है- "रंगनाथ ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, "पता नहीं चला कि प्रिंसिपल और खन्ना में क्या बात हुई। ड्रिल मास्टर बाहर खड़ा था। खन्ना मास्टर ने चीखकर कहा, "यही आपकी इंसानियत है? वह सिर्फ़ उतना ही सुन पाया बद्रीने जम्हाई लेते हुए कहा, प्रिंसिपल ने गाली दी होगी। यह खन्ना इसी तरह बात करता है। साला बांगडू है। "रंगनाथ ने कहा "गाली का जवाब तो जूता है।"। बद्रीने इसका कोई जवाब नहीं दिया। रंगनाथ ने फ़िर कहा " मैंतो देख रहा हूं यहां इंसानियत का जिक्र ही बेकार है। " बद्रीने सोने के लिए करवट बदल ली।

"गुड नाइट" कहने की शैली में वे बोले-सोतो ठीक है। पर यहाँ जो भी क-ख-ग-घ पढ लेता है, उर्दू भूंकने लगता है। बात-बात में इंसानियत-करता है। कल्ले में जब बूता नहीं होता, तभी इंसानियत के लिए जी हुडकता है।"[6]

उपर्युक्त वार्तालाप में बद्री पहलवान और रंगनाथ दोनों का चरित्र स्पष्ट होता है। बद्री अपनी पहलवानी छांटते है। रंगनाथ, रंगनाथ है। व्यक्ति के साथ अपना रंग बदल देते है। खुद में किसी प्रकार का दम है नहीं, इसलिए हमेशा मरने –मारने और लड़ने की बात करते है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि चरित्र निर्माण में भाषा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता।

वातावरण या देशकाल के निर्माण में भाषा का योग :

वातावरण को ही 'देशकाल' या परिवेश कहते है। 'देशकाल' शब्द में दो शब्द हैं देश+काल। देश का अर्थ है स्थान और काल का अर्थ है समय। 'राग दरबारी' का देश है- शिवपालगज नामक गांव, जो उत्तरप्रदेश में कानपुर के पास आया हुआ है। 'काल' विषयक चर्चा हम अध्याय के आरंभ में ही कर चुके है। उपन्यास यथार्थ की विद्या है और यथार्थ का निर्माण होता है यथार्थ वातावरण के चित्रण से। जिस प्रकार भाषा और चरित्र के बीच चोली-दामन का साथ है, उसी प्रकार देशकाल और भाषा मे भी नजदीकी रिश्ता है। जो प्रदेश या स्थान होगा, उसकी अपनी एक बोली-बानी होती है।

'राग-दरबारी' उपन्यास से एक परिदृश्य देखिए:

"अँधेरा हो चला था, पर अभी हालत ऐसी नहीं थी कि आंखके सामने खड़े हुए आदमी और जानवर में तमीज न की जा सके। वैद्यजी की बैठक में एक लालटेन लटका दी गयी। साम रास्ते से तीन नौजवान जोर-जोर से ठहाके लगाते हुए निकले। उनकी बातचीत किसी एक ऐसी घटना के बारे में होती रही जिसमें 'दोपहर' 'फ़ण्टूश', 'चकाचक', 'ताश' और 'पैसे' का जिक्र उसी बहुतायत से हुआ जो प्लानिंग कमीशन के अहलकारों में 'इवैल्यूएशन' 'कोआर्डिनेशन', 'डेवटेलिंग' या साहित्यकारों में 'परिप्रक्ष्य' 'आयाम', 'युगबोध', 'संदर्भ' आदि कहने में पायी जाती है। कुछ कहते-कहते तीनों नौजवान बैठक से आगे जाकर खड़े हो गये।

सनीचर ने कहा, "बद्री भैया इन जानवरों को कुश्ती लडना सिखाते हैं। समझ लो बाध के हाथ में बन्दूक दे रहे हैं। वैसे ही सालों के मारे लोगों का रास्ता चलना मुश्किल है, दांव-पेच सीख गये तो गांव छोड देना होगा।"[7]

• यहां तीन पारिवेशिक स्थितियां है-एक तरफ़ गांव के तीन नौजवानों का उल्लेख है और शायद उनमें ताश के खेल को लेकर बाते हो रही है। गांव मे ताश के दरमियान इसी प्रकार के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग होता है। तो दूसरी तरफ़ प्लानिंग कमीशन की बात है तो वहां ऐसे शब्द है जिनका प्रयोग उनके अहलेकार प्राय: करते रहत है। तीसरी तरफ़ साहित्यिक हलकों में आजकल जिन शब्दों का बोलबाला है उसका व्यंग्यात्मक उल्लेख लेखक ने किया है।

कालिकाप्रसाद का पेशा सरकारी ग्राण्ट और कर्जे खाना है। वे सरकारी पैसे के द्वारा सरकारी पैसे के लिए जीते थे। अंत: जहां उनका प्रसंग आया है वहां निम्नलिखित शब्दों कि भरमार मिलती है-कार्रवाई, कर्जा, तकावी, पाँच बीघा जमीन, दरखास्त, ग्राण्ट, स्कीम, योजना आयोग, बजट, टैक्स, मुर्गी पालन की ग्राण्ट, चमडा कमाने की ग्राण्ट, नए ढंग का संडास बनवाने की ग्राण्ट, कारगुजारी आदि-आदि।[8]

गयादीन की लड़की जो प्रेमपत्र लिखती है उसमें सिनेमा के तमाम गानों की पक्तियों का समावेश हो जाता है। ग्रामीण बेला समाज की अधपढी लदकियों पर सिनेमा का कितना और कैसा असर है उसे उसके खत मे देखा जा सकता है-"ओ सजना बेदर्दी बालमा, तुमको मेरा मन याद करता है। अब तो मेरी हालत यह हो गई है कि सहा भी न जाये, रहा भी न जाये। देखो न मेरा दिल मचल गया, तुम्हे देखा और बदल गया। और तुम हो कि कभी उड़ जाये, कभी मुड़ जाये, भेद जिया का खोले ना। मुझको तुमसे यही शिकायत है कि तुमको प्यार छिपाने की बुरी आदत है। कहीं दीप जले, कहीं दिल, जरा देख तो आकर परवाने।...,[9] लगभग एक पृष्ठ का पत्र इस प्रकार की पंक्तियों से सरोबार है।

वातावरण का यथार्थ चित्रण अंकित करने में भाषा कितनी सहायक होती है उसका एक उदाहरण यहां प्रस्तुत है--

" शिवपालगंज में इन दिनों में इन्सानियत का बोलबाला था। लौण्डे दोपहर की धनी अमराइयों में जुआ खेलते थे। जीतने वाले जीतते थे, हारने वाले कहते थे" यही तुम्हारी इन्सानियत है? जीतते ही तुम्हारा पेशाब उतर आता है। टरकने का बहाना ढूंढने लगते हो। "... कभी-कभी जीतने वाला भी- इन्सानियत का प्रयोग करता था। वह कहता, "क्या इसीका नाम इंसानियतहै? एक दाव हारने मे ही पिलपिला गये? यहां चार दिन बाद हमारा एक दाव लगा तो उसीमें हमारा पेशाब बन्द कर दोगे?[10]

इस प्रकार पूरा माहौल 'इन्सानियत' और'पेशाब' इन दो शब्दों से महमहा उठता था।

वर्ण-विचार: भाषा की सबसे छोटी इकाई 'ध्वनि' है, पर 'ध्वनि' का अपना कोई अर्थ नहीं होता। अंत: 'भाषिक-संरचना' पर विचार करते हुए उसके बाद की इकाई 'वर्ण' या अक्षर पर आते ऐं। एकाधिक ध्वनियों के योग से 'वर्ण' य'अक्षर' का निर्माण होता है। जैसे 'क' एक वर्ण या अक्षर है। वह दो ध्वनियों के योग से निर्मित हुआ है –क+अ=क । वैसे ध्वनि की भाँति वर्ण या अक्षर के भी प्राय: अर्थ नहीं होते। पर उसमें कुछेक अपवाद है, जैसे 'ख' का अर्थ आकाश होता है। 'ढ' अक्षर का प्रयोग हमारे यहॉ 'बुद्धू' या 'मूर्ख' के रूप में लक्षणा-शक्ति द्वारा होता रहा है। वैसे यह जानकर कइयों को आश्चर्य हो सकता है कि नागरी लिपि में 'ढ' वर्ण में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। आज के ये सभी वर्ण-क, ख,ग, अ, ज, झ आदि बनते-बिगडते यहॉ तक पहुचते है, पर 'ढ' में ज्यादा परिवर्तन नही आया है।[11] खैर, बात हमें 'राग दरबारी' की भाषिक-संरचना के संदर्भ में करनी है और उसी उपक्रम के तहत हम 'वर्ण-विचार' पर आए है। 'राग दरबारी' में दो श्ब्दों के निर्माण में लेखक ने अपनी व्यंग्य-शैली व प्रतिभा का परिचय दिया है । वे दो शब्द है- 'छंगामल' और 'रंगनाथ' । 'छंगामल' कालेज का नाम है। कोई और अच्छा नाम भी हो सकता था। पर कालेज में जिस प्रकार की प्रवृत्तियाँ चल रही है, उनके चलते यह नाम बड़ा 'घांसू' दिखता है। जिस प्रकार 'रंगनाथ' गिरगिट भांति रंग बदलता है उसे लक्षित करते हुए 'रंगनाथ' सार्थक प्रतीत होता है। यहां पर 'छं' और 'र'

वर्ण के कारण यह वक्रता आई है। छोटू पहलवान के पिता का नाम कुसहरप्रसाद है, यहां भी 'कु' वर्ण द्वारा पात्र के चरित्र की वक्रता व्यंजित हुई है। ये कुसहरप्रसाद वही है जो उनके बाप गंगा- दयाल के मरने पर उनकी अर्थी तक नहीं निकलने दे रहे थे, कहते थे कि घाट तक घसीटकर डाल आयेंगे।[12]

शब्द-विचार: 'वर्ण-विचार' के प्रश्चात हम 'शब्द-विचार' पर आते हैं, क्योंकि 'वर्ण' के बाद भाषा की दूसरी इकाई 'शब्द' है। शब्द ध्वनियो का समूह है। पर कुछेक ध्वनियों को मिलाने मात्र से शब्द की रचना नही होती है। किसी भी ध्वनि-समूह को शब्द की संज्ञा तब मिलती है जब उस ध्वनि-समष्टि से किसी अर्थ की व्यंजना होती हो। उदाहरणतया 'योजना' शब्द को हो ले लों । उसमें छ: ध्वनियां है- य+ओ+ज+अ_+न+आ। तीन अक्ष है –यो+ज+ना। अब इन्हीं का क्रम बदल दिया जाय- 'नाजयो', तो ध्वनि-समूह तो वही रहेगा, पर शब्द नहीं बनेगा, क्योंकि हमारी भाषा में 'नाजयो' जैसा कोई शब्द नहीं है। तो शब्द की व्याख्या हुई: सार्थक ध्वनि-समष्टि को शब्द कहा जाता है।[13]

'शब्द-विचार' के अंतर्गत हम निम्नलिखित मुद्दों की पड़ताल 'राग दरबारी' उपन्यास के संदर्भ में करेंगे –(क) शब्दों का वर्गीकरण-शास्त्रानुसार, (ख) ध्वन्यात्मक शब्दावली, (ग) ग्रामीण शब्दावली, (घ) व्यंग्यात्मक शब्दावली (च) गालीवाचक शब्दावली, (छ) आवृत्तिमूलक शब्दावली, (ज) उर्दू शब्दावली, (झ) अंग्रेजी शब्दावली (ट) सस्कृत शब्दावली आदि-आदि।(ठ) शब्द-सहचयन (ड) मुहावरोंका प्रयोग

भाषा में शब्द का बड़ा ही महत्व है। हमारे यहा शब्द को 'ब्रह्म' तक कहा गया है। साहित्यकार या कवियों को शब्द-स्वामी कहा गया है। शब्द के संदर्भ में निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों को उद्धृत करने का मोटू संवरण नहीं कर पा रही हूं-

वक्त बहुत कम है, दर्द को जीने के लिए
वक्त बहुत कम है, जख्म को सीने केलिए।
यह चार रोजां जिन्दगी, आपाधापी का आलम:
वक्त बहुत कम है, शब्द को जीने के लिए।[14]

एक बार एक रिक्शे के पीछे मैने पढ़ा-'शब्द शस्त्र आहे जरा झपून वापरा। अर्थात शब्द तो शस्त्र है, जरा सोचकर इस्तेमाल किजिए। महाभारत न होता यदि द्रोपदी ने थोडा शब्द-संयम रखा होता ।

अब उपर्युक्त मुद्दों को लेकर क्रमश: चर्चा होगी-

(क) शब्दों का वर्गीकरण- शास्त्रानुसार: शास्त्रानुसार वर्गीकरण में भी दो कोटियाँ आयेंगे - (1) नीति शास्त्रानुसार और (2) काव्याशास्त्रानुसार।

(1) नीति शास्त्रानुसार : नीति शास्त्र या न्याय शास्त्र के अनुसार शब्द तीन प्रकार के होते हैं-(अ) प्रभु-सम्मित, (ब) सुहृद-सम्मित और (स) कान्ता सम्मित। प्रभु सम्मित शब्द उसे कहा जाता है , जहां हुक्म दिया जाता है। उपन्यास में वैद्यजी, रूप्पनबाबू, बद्री पहलवान आदि के आदेशात्मक वाक्यों में जो शब्द आये है, उन्हें वहां हम प्रभु-सम्मित शब्द कहेंगे। कुसहरप्रसाद अपने बेटे की फ़रियाद लेकर जब वैधजी के पास आते हैं, तब वैधजी उसकी बात न सुनते हुए, कुदहरप्रसाद को कहते हैं-'जाकर पट्टी-बट्टी बंधवा लो। यहां बहुत न टिलटिलाओ। [15] यह दीगर बात है कि इससे पूर्व कुसहर की शिकायत पर वैद्यजी का कथन था- 'छोटे का आज से यहां आना बन्द। ऐसे नारकीय लोगों के लिए यहां स्थान नहीं है।'[16] पर कुसहर की शिकायत पर बद्री का रुख देखकर वैधजी अपना आदेश बदल देते है। इसी तरह एक स्थान पर रुप्पनबाबू प्रिंसिपल साहब को कहते है- 'मैं समझता हूं कि हमारे यहां एक वाइस प्रिंसिपल भी होना चाहिए'[17] यहा भी जो शब्द है प्रभु-सम्मित अर्थ में आये है। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है कि शब्दों को प्रभु सम्मित या कान्ता-सम्मित बनाने का श्रेय संदर्भ-विशेष पर जाता है कि किन संदर्भों में उनका प्रयोग हुआ है। (ब) सुहृद-सम्मित शब्द उसे कहते है जहां सुहृद या मित्र की तरह कोई सलाह दी जाती है। उपन्यास के प्रारंभ में(तीसरे परिच्छेद में) प्रिंसिपल और क्लर्क का जो वार्तालाप है, उसे सृहद-सम्मित के उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है: क्लर्क ने पूछा 'यह कौन चिड़ीमार है? ... 'मेलेरिया इंस्पेक्टर है... नया आया है। बी. डी. ओ. का भांजा लगता है। बड़ा फ़ितरती है। मैं कुछ बोलता नहीं। सोचता हूं, कभी काम आयेगा। '

क्लर्क ने कहा, 'आजकल ऐसे ही चिड़ीमारों से काम बनता है। कोई शरीफ़ आदमी तो कुछ करके देता नहीं।'... 'हर आदमी से मेल-जोल रखना जरूरी है। वस्तुत: प्रिंसिपल का ओहदा क्लर्क से ऊँचा होता है। प्रिंसिपल की बात आदेशात्मक होनी चाहिए, पर यहां प्रिंसिपल साहब क्लर्क से भी दबते हैं और उसकी सलाह लेते हों ऐसा लगता है। यही तो व्यंग्यात्मक स्थितियां हैं। (स) कान्ता-सम्मित शब्द उसे कहते हैं जहां बात तो साधारण तौर पर कहीं जाती है, पर उसे रखा इस तरह (कान्ता की तरह) जाता है कि सामने वाला हर हालत में उस बात को मानन को राज़ी हो जाता है। मसलन वैद्यजी का यह कथन : 'यह तो धर्मयुद्ध है। तुम्हें लगता है कि ये दो-चार अध्यापक सही मार्ग पर चल रहे है, अत: तुम उन्हें स्नेह दिखा रहे हो। पर सन्मार्ग क्या है, और असन्मार्ग क्या है, इसका तुम्हें कभी-न-कभी तो अनुभव होगा ही। जब होगा, तब तुम स्वयं अपनी पहलेवाली स्थिति में आ जाओगे। ... तुम शिक्षित हो, बुद्धिमान हो, मुझे तुम्हारी चिन्ता नहीं है। चिंता रूप्पन की है। ... धर्मयुद्ध में समझ की नहीं, विश्वास की बात है। तुम्हें जब यही विश्वास है कि हम दोषी है, तो कोई चिंता नहीं, डटकर हमारा विरोध करो। जिस दिन मेरे प्राणों की आवश्यकता हो, बता देना। मैं भीष्म पितामह की तरह मरने की तिथि अपने आप निश्चित कर लूंगा। [18] इन बातों से वैधजी रंगनाथ को निरस्त्र और निष्क्रिय बना देते है। इसे कहते है- अमृत दिए जो मरे माहुर दियो न जाय।

(2) काव्यशास्त्रानुसार: काव्यशास्त्र के अनुसार शब्द की तीन शक्तियां है- अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। अभिधा शक्ति वहां होती है जहा शब्द को उसके मूल कोशगत अर्थ में ग्रहण किया जाए। एक-दो उदाहरणो द्वारा इसे स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे। निम्नलिखेत कुछ वाक्यों को देखिए-

(त) ड्रायवर साहब तुम्हारा गियर तो बिल्कुल अपने देश की हुकूमत जैसा है।

(थ) वर्तमान शिक्षा-पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है।

(द) उनके नेता होने का सबसे बड़ा आधार यह था कि वे सबकों एक निगाह से देखते थे।[19]

उपर्युक्त वाक्यों में रखांकित शब्दों का अर्थ वही है जो समझा जाता है, अर्थात कार या ट्रक का वह पार्ट जिससे ग्ति कम या ज्यादा की जाती है, मादा कुतिया और नज़र। पर उनमें जो व्यंग्य है वह तभी खुलता है जब हम उसकी तफ़तीस पढ़ते है। यहां लेखकने शब्द की अभिधा शक्ति से ही व्यंग्य का काम लिया है। इसे सपाटबयानी भी कहते हैं

शब्द की दूसरी शक्ति है लक्षणा। जहां शब्द का मूल अर्थ या कोशगत अर्थ न लेकर रूढ़ि द्वारा स्थापित अर्थ लिया जाता है, वहां'लक्षणा' शक्ति होती है। [20] उदाहरणतया यदि कोई व्यक्ति जा रहा है और हम कहते है कि,'देखो, गधा जा रहा है',। यो यहां 'गधा' का अर्थ होगा मूर्ख या बुद्धू। इस तरह के सैंकड़ो शब्द हमें उपन्यास में मिलते हैं, यहां केवल परिगणना हेतु दो-तीन उदाहरण प्रस्तुत करेंगे-

(य) बेईमान मुन्नू बड़े बाइज्ज्त आदमी थे।

(र) आजकल ऐसे चिड़ीमारों से ही काम चलता है।

(ल) आप हुकुम दें तो किसी दिन यहीं अंधेरे-उजेले में प्रिंसिपल साहब का भरत-मिलाप करा दिया जाए।[21]

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों के कोशगत अर्थ कुछ है और यहां अभिप्रेत अर्थ शिवपालगंज के लोगों जो प्रचलित और रूढ अर्थ है वही है। मुन्नू वस्तुत: एक बेहद ईमानदार व्यक्ति है। पर 'गजहे' उनको बेईमान कहते है। "चिड़ीमार' का अर्थ गजहों की भाषा मे पढा लिखा कुछ सलीके से रहनेवाला आदमी है। 'भरत-मिलाप' में तो राम-भरत के मिलाप और उनके प्रेम और स्नेह की बात थी, पर 'गंजहे' किसीको मरवाने या पिटवाने के अर्थ में इसका प्रयोग करते है।

शब्द की तीसरी शक्ति है 'व्यंजना' शक्ति। अभिधा में कोशगत अर्थ होता है। व्यवहार का सारा काम लगभग इसी शक्ति के द्वारा संपन्न होता है। लक्षणा में रूढ़िगत अर्थ को ग्रहण किया जाता है और 'व्यंजना' वह शक्ति है जिसमें ध्वनिगत अर्थ को ग्रहण करना होता है। [22] फ़लत: व्यंजना में शब्द के अर्थ को उसके सदर्भ में ग्रहण करने का होता है। अत: व्यंजना में प्रयुक्त होने वाले शब्द प्राय:

प्रतीकात्मक होते हैं जिनके अर्थघटन के लिए उनके संदर्भ को समझना आवश्यक हो जाता है। उदाहरणतया गज़ल की एक पंक्ति है-'यह नदी कैसे पार की जाये' यहां 'नदी' शब्द प्रतीकात्मक है और भिन्न-भिन्न संदर्भ में उसके अर्थ भिन्न-भिन्न होंगे। किसी कर्ज के समंदर में डूबे व्यक्ति के लिए 'नदी' का अर्थ 'कर्ज की नदी' से होगा, किसी जवान कुंवारी लड़की के मा-बाप के लिए अर्थ होगा कि किस तरह उस लड़की की नैया पार लगायी जाय, किसी भ्रष्टाचार के आरोप में लिप्त व्यक्ति के लिए उसका एक तीसरा ही अर्थ हो सकता है । अब 'राग दरबारी' के संदर्भ में इसकी चर्चा करेंगे ।

(श) वैद्यजी थे, है और रहेगे।

(स) छोटे, तुम खन्नाजी और मालवीयजी को उधर ले जाओं। ... जाओ, बद्री तुम भी जाओ।

(ह) यहां लंगड़ कहता था, धरम से नकल लूंगा। बाबू कहता था, धरम से नकल दूंगा। फ़िर भी लड़ाई चल रही थी।[23]

उपर्युक्त वाक्यों में 'वैद्यजी' एक प्रतीकात्मक शब्द है। वैद्यजी प्रतीक हैं भ्रष्ट, शातिर, नेता के, जो हर जमाने और युग में रहे है । दूसरे वाक्य में वैद्यजी छोटू पहलवान और बद्रीपहलवान को कहते हैं कि वे दोनो मास्टरो को एक तरफ़ ले जाएं इसका अर्थ यह है कि 'भरत-मिलाप' के द्वारा वे उन दोनो को भलीभाति समझा दें। तीसरे वाक्य का अभिप्राय समझने के लिए पूरे लगड़-बाबू अध्याय को समझना जरूरी होगा। धरम से नकल दूंगा, मतलब कायदे से नकल दूगा और धरम से नकल लूंगा, मतलब कायदे से नकल लूंगा। यह तो लक्षणा के अर्थ हुए , पर व्यंजना से अर्थ यह निकलता है कि हमारे देश में छोटे-सेछोटा काम भी यदि कायदे से कराना हो तो महीनों लग जाते है। गुजरात में 'रिश्वत' के लिए शब्द चल पड़ा है—'व्यवहार'। हमारा इतना काम कर दो, जो भी 'व्यवहार' होगा हम दे देंगे। बिना व्यवहार दिए काम कराना होतो फ़िर लंगड़ की तरह कचहरी के चक्कर लगाते रहिए।

(ख) ध्वन्यात्मक शब्दावली: ध्वन्यात्मक शब्दावली से अभिप्राय ऐसी शब्दावली से है जिनमें ध्वनियां होती है, किन्तु इनके कोई निश्चित अर्थ नहीं होते, जैसे हुर्र, हुर्र, हुह हुह, हें-हें आदि। 'राग दरबारी' उपन्यास में इस प्रकार के कुछ शब्द आये हैं, जो इस तरह है:- म्यांव म्यांव, (हारमोनियम की) भक भक भक (आटाचक्की की) फुस-फुस(कानाफूंसीकरना) चूं-चूं करना, सर्फाले (साले) भम्भक, टांय-टांय, टिपिर-टिपिर करना, ठाय-ठांय, तू-तू मैंमैं, हुआ-हुआ करना, हें-हें-ठें-ठें-फ़ें-फ़ें, फ़ाय-फ़ांय करना, हाउ-हाउ, टिलटिलाना, टें-टें करना, हें-हे-हें करना, टिल्लाना, चुचुआना, चांय चांय करना, पड़ाक से कंटाप पर पड़ना, पिल्लसे निकल पड़ना, अंड-बंड बकना, एह हेह,घसड-फ़सड, गिचिर-पिचिर, थू-थू करना, भुनभुनाना, शिश, फ़टाफ़ट, सिलिर-सिलिर करना, भडाक से फूटना, हीं-हीं-हीं करना, टप से हलक से निकलना, फुसफुसाना, भभ्भड़ मच जाना। तुम तड़ाक करना, गों-गों-गों(उलटी की आवाज) फ़ींचना (इज्जत फ़ीचकर रखदी), उर्र र्र र्र, (सनीचर की एक ध्वनि) मसक जाना, लेहो-लेहो-लेहो, सटाक से, तबीयत का घिस-घिसाना, तुस-मुस-भुस, (उस की तुक के शब्द) आदि-आदि।[24]

(ग) ग्रामीण शब्दावली: उपन्यास के केन्द्र में उत्तर-प्रदेश का एक गांव है- शिवपालगंज। अत; उसमें ग्रामीण शब्दावली का प्रयोग बहुतायत से हुआ है। वैद्यजी शुद्ध परिनिष्ठित संस्कृत-तत्सम शब्दावली युक्त भाषा का प्रयोग करते है। रंगनाथ, गयादीन आदि भी शुद्ध खड़ीबोली का प्रयोग करते है। पर अधिकांश "गंजहे" ग्रामीण भाषा का ही प्रयोग करते हैं अत: ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले शब्दों का मिलना स्वाभाविक ही कहा जाएगा। यथा- चिड़ीमार, टिप्प्स (युक्ति), चण्डूल, (मूर्ख) शहराती, गंजहा, चोंचले, कानी कौड़ी, तीसमारखां, दीवार में सेंध लगाना, नाम में लाल लंगोट वाले के जोर का बोलना, अंधेरे-उजेले में, ठिल्लें मार कर हंसना, बांगडू, कुकरहाव, बंदरहाव, पैकरमा (परिक्रमा), फ़टीचर, घरघुस्सू, गबडू-घुसडू, बौडम, टिचन्न (ठीक) मेंढक को जुकाम होना, लड़ास (लडने की इच्छा), टिलटिलाना, बडकऊ, (बडाभाई), छोटकऊ, टुटहा छप्पर, अजुध्या महाराज (अयोध्या महाराज), राहचलन्तू, टिल्लाना, फ़ंटूशी, मरखन्ना बैल,

चिमिरखीदास, कंटोप, कोड़िल्ला, अंड-बंड(कुछतो भी), जइस पसु, तइस बंधना (जैसे के साथ तैसा व्यवहार), तिक्ड़म, पालक-बालक, घसड़-फ़सड़(शारीरिक-सम्बन्ध), गिचिर-पिचिर(व्यर्थ का बकवास), पक्की(ताश के पत्तों में रनिंग फ़्लश के लिए) लंगडी(फ़्लश), टिरैल (ट्रेल), टैंट (देहाती लोग कमर में जहां पैसे रखते है।), सिलिर-पिलिर(बकबक) दिहाती, शहराती, चरौंधाजूता, इज्जत फींचना (इज्जत का कचरा करना), मसक जाना (बिगड़ जाना), ऐंचातानी (खींचतान), लम्बर(नम्बर-टर्न), चुग्गड (शराब पीने का मिट्टी का बर्तन), सूअर का लेंड (शहर का आदमी), बधिया (कत्ल) लौडों की दोस्ती, गंडेरिया (गन्ने के छीले हुए टुकडे) सिंघाड़े, डुगडुगी(मदारी का एक वाद्य) आदि-आदि।[25]

(घ) व्यंग्यात्मक शब्दावली: उपन्यास की गणना 'विरोध का साहित्य' के रूप में हो रही है।'यथा स्थितिवाद' का विरोध उपन्यास का एक लक्ष्य होता है, और जहां विरोध होता है वहां 'व्यंग्य' होता ही है। लिहाजा कह सकते है कि 'व्यंग्य' का प्रयोग उपन्यासकार सदैव करते आये हैं। प्रेमचंद के 'सेवासदन' के प्रारंभ में ही एक व्यंग्य-कथन दिया गया है"-पश्चाताप के कड़वे फ़ल कभी-न-कभी सभी को चखने पड़ते है, लेकिन और लोग बुराइयों पर पछताते है, दरोगा कृष्णचन्द्र अपनी भलाइयों पर पछता रहे थे।"[26] परंतु 'राग दरबारी' एक ऐसा उपन्यास है जहां 'व्यग्य' औजार के रूप में नही, साधन के रूप मे नही, बल्कि उसका लक्ष्य या साध्य बनकर आया है। 'राग दरबारी' की अत्यधिक सफ़लता का रहस्य भी यही है कि प्रचलित कथानक-रुढ़ियों के स्थान पर उसके लेखक ने एक नया रास्ता अख्तियार किया था। इवान वोट महोदय का कथन है -- "Since the Novelist Primary task is to convey the impression of fidelity of human experience, attention to any Pre-established formal convention can only endanger his success."[27]

'मैला आँचल' के साथ भी लगभग यही हुआ था। वातावरण या परिवेश उपन्यास का एक निहायत जरूरी तत्व था, पर 'मैला आँचल ' में वह पूरे अधिकार के साथ अपना ह्क मांगते हुए आता है और वह साहित्याकाश में छा जाता है, ठीक यही

बात 'राग दरबारी' के साथ होती है, 'व्यंग्यात्मकता' यहां पूरी सज-धज के साथ उपस्थित है। अत: 'राग दरबारी' में व्यंग्यात्मकता' में व्यंग्यात्मक शब्दावली की बहुतायत इतनी हैं कि पन्ने के पन्ने भी नाकाफ़ी रहे, तथापि परिगणना हेतु कुछेक शब्द यहां प्रस्तुत हैं-

दुकानदारिन की सारी सभावनाएं(उसके इन्स एण्ड आउट्स) देश की हुकूमत जैसा गियर, वर्तमान शिक्षा-पद्धति=रास्ते में पडी हुई कुतिया, रामाधीन भीखमखेड़वी=शिवपालगंज के जुआरी-सघ के मैनेजिग डाइरेक्टर, छंगामल कालेज, चिड़ीमार, चण्डूल, सनीचर, गंजहे, तीसमारखां, लाल लंगोटवाले=हनुमानजी, किसी महिला के शीलभंग का मुकद्दमा=राजनीतिक युद्ध का हैण्डग्रिनेड, बांगडू, फ़ण्टूश, पं.रधेलाल काना= कभी न उखड़नेवाला गवाह, स्त्री द्वारा पेट के रास्ते से आदमी के हृदय पर कब्जा करना, ठांय=फिजूल की बात को खींच-खींच कर लम्बा करना, मेंढ़क का जुकाम, गुडनाइट की शैली में बात करना=सोने से पहले कुछ कहना, टिलटिलाना, कुकरहाव, बंदरहाव, चढ जा बेटा सूली पर, बात के बतासे फ़ोड़ना, स्त्रियों की छातियों के हाल-चाल जानना, बिना मिलावट के कोई चीज न बनाना=समन्वयवाद, राहचलन्तू, बालों का चुचुआना, चिमरखीदास, वैद्यजी के पैताने दयनीय चेहरा बनाकर बैठा हुआ हलवाहा-सा व्यक्ति=प्रजातंत्र, कौडिल्ला न्याय, (देहातियों को मिलने वाला पंचायती-न्याय, जइस पसु तइस बंधना, हिन्दुस्तान में पढ़े-लिखे आदमी की बीमारी=क्राइसिस आफ़ कांशस या क्राइसिस आफ फ़ेथ, फूले हुए को फ़ोड़ना, तिकड़म, कालिकाप्रसाद के बिना किसी के उखाड़े से एक रोआं तक न उखडना, पालक-बालक=पहलवानों के पट्ठे, बेचारा व्यक्ति=जो अपनी जोरू को काबू में न रख पाए, किन्तु-परन्तु-तथापि=नपंसकों की भाषा बतौर वैधजी के, हिन्दुस्तान=भुन भुनाने वालों का देश, टहलना काम घोड़ी का, चूतड की खाल तक को बेच डालने वाला आत्मविश्वास, मुनक्का=बकरी की लेंडी बकौल गंजहों के, फ़टीचर देश, तेली तंबोली वाली औकात, बेवकूफ़ी का भी अपने आप में एक वैल्यूहोना(गंजहो के यहां), पाखाना करते-करते देहाती औरतों का उठ खड़े होना=गार्ड आफ़ ओनर,

बुद्धिजीवी=विलायत का एक दौरा कराने पर जो यह भी साबित कर दें कि वह अपने बाप की औलाद नहीं है, काइयांपंथी, मलमूत्र त्याग के लिए कभी टट्टी-पेशाबखाने में न जाना=प्राचीन ऋषि परंपरा, जवानी पर पिल्ले मूतना, खुदा का गधों को जलेबियां खिलाना=अयोग्य लोगों का लाभान्वित करना, क्लच और एक्सिलेटर साथ दबानेवाला आदमी=नौसिखिया व्यक्ति, ऐंचातानापरसाद=देहाती बच्चा=धूल,काजल,लार,किचड और थूक का बंडल, शिकमी=डमी उम्मीदवार, दरशिकमी=डमी का डमी, बीस लड़कों के बाप को बताना कि औरत क्या चीज़ होती है, हिन्दुस्तानी आदमी=काला जमीन पर हगने वाला आदमी, युधिष्ठिर का बाप बनना, शहर का आदमी=सूअर का लेंड-न लीपने के काम आवे न जलाने के, रामचरन=वैधजी के रामराज्य का धोबी, तिड़ीबाजी, आदमी साबित करने वाले स्थान पर अंगोछा-ढ्का आदमी, बुद्धिजीवी=गुटबन्ध होने के बावजूद तट्स्थता का नाटक करने वाला व्यक्ति, जी का जंजाल=लौंड़ों की दोस्ती, भरत-मिलाप करा देना(पीटवाना)सिट्टी-पिट्टी गायब होजाना= बहुमूत्र का रोग लगना, कीचड़ की चापलूसी, रंगनाथ के लिंए वैद्यजी के कालेज में काम करमा=अपने घर के बाग़ के आम खाना आदि-आदि।[28]

(च) गालीवाचक शब्दावली: गांवो की बोली बडी नमकीन होती है। उसमें गालियो का प्रयोग कहावत-मुहावरो की तरह होता है। इसलिए तो श्रीलाल शुक्ल (राग दरबारी के लेखक / गाली को 'आत्माभिव्यक्ति का जनप्रिय तरीका' कहते है।[29] पुरुषो और स्त्रियों की गालियो में भी कुछ अन्तर होता है, हालांकि 'राग दरबारी' में स्त्री-पात्र अधिक नहीं है, अत: उनसे सम्बद्ध गालिया भी नही मिलती है। 'आधा गांव', 'जल टूटता हुआ', 'नदी फ़िर बह चली,' 'मित्रो मरजानी,' 'धरती धन न अपना'[30], आदि में स्त्रियों कि गालियां मिलती है जो इस तरह की है- खाहुनपीटी, मट्टीमिले, झाडूमारे, माटमिली (आधा गाव),दहिजरा, मरकिनवा, राछस (जल टूटता हुआ), भतरचिलननी, घुरफ़ंदी, सउतिन, कसबिन, भतराचबुनी, पटका फ़ोड़ू (नदी फ़िर बह चली), कंगले राकस, गर्क जानो, मुंहझोंसी, मरजानी, नासहोनी (मित्रो मरजानी), हरजाई कुतिया, फ़लां की रखैल, मोयो, सिरमुन्निए

(धरती धन न अपना) आदि-आदि।[31] स्त्रियों की तुलना में पुरूषों की गालियां अधिक नग्न , अश्लील, स्थूल स्त्री-योनी-मूलक होती है। नगरीय स्लमों की वेश्याएं और निम्न जाति की स्त्रियां इसमें अपवाद है। गुजरात में 'वाघरी' नामक एक जन-जाति होती है, उसकी स्त्रियां भी बहुत गाली-गलौज वाली भाषा का प्रयोग करती हैं। 'राग दरबारी' उपन्यास में केवल एक स्थान पर स्त्रियों वाली गाली आयी है, वह भी उतनी खास नहीं है, यथा- मुआ ताज़ा-ताज़ा दिहात से आया था ।[32] यहा बेगम साहिबा हकीम साहब को बताती है कि उनका शाहजादा एक भिश्ती की औलाद है। पहले गालियों का काम' '.........' से चलाया जाता था, पर आधुनिक उपन्यासकार और कहानीकार ऐसा नहीं करत्ते। वे गालियों को जस की तस रख देते हैं। हालांकि 'राग दरबारी' में 'काशी का अस्सी' की तुलना में पुरुषों की गालियों का प्रयोग कम हुआ है, यथा-ससुर, मादरचो......, गया चूत में साला, उठ बे भिश्ती की औलाद आदि-आदि।[33]

(छ) आवृत्तिमूलक शब्दावली: गांव के लोगों में शब्दों को दोहरा-दोहराकर बोलने की एक आदत-सी होती है। पंजाबियों में भी इसे देखा जाता है। गुजरात में भी इसका काफ़ी प्रचलन है। आवृत्ति के समय प्रथम वर्ण या अक्षर में थोड़ा बदलाव होता है, जैसे-रोटी-बोटी, गाम-बाम आदि(गुजरात में)। इन्ही शब्दों को पंजाबी इस तरह बोलते है-रोटी-सोटी, गांव-सावा गुजराती का 'ब' यहा 'स' हो गया है। इस समय (2011) एक सीरियल आता है- 'राम मिलाई जोड़ी'-उसमें उसकी नायिका को इस तरह बोलने की आदत है। उसके प्रत्येक वाक्य मे लगभग यह प्रवृत्ति देखी जा सकती है। बहरहाल बात हम "राग दरबारी" उपन्यास की कर रहे हैं। उसमें भी इस प्रकार के कई शब्द पाये गये हैं। यथा-म्यांव-म्यांव, मेल-जोल, फ़ुस-फ़ुस, कच्चा-पक्का, दौर-दौरा, अंधेरे-उजेले (वक्त-बेवक्त), टांय-टांय, फ़ांय-फ़ांय, साफ़-सुथरा, रईस-बईस, हाकिम-हुक्काम, पालक-बालक, घसड़-फ़सड़, गिचिर-पिचिर, सिलिर-सिलिर, कपड़ा-लत्ता, गोली-बोली, चुग्गड़-फुग्गड़, गबन-फ़बन, तोड़ना-मरोड़ना, लौंड़े-बौंड़े, घिस-घिस,उस-तुस, मुस-भुस, कीचड़-फ़ीचड़, गबड़ू-घुसड़ू, आंय-बांय, लौंडे-लफ़ाड़ी।[34]

(ज) उर्दू शब्दावली: हिन्दी शब्द-समूह में तत्सम, तदभव के उपरान्त अनेक भाषाओं के शब्द आये है। भाषा तो एक निरंतर बनती हुई प्रक्रिया है। भाषा प्रयोग से विकसीत होती है। हमारे यहां आर्य, शक, कुबाण, हुए मुसलमान, मुगल, पुर्तगाली, अंग्रेज, फ्रेन्च वगैरह अनेक जातियों के लोग आए है और साथ ही उनकी भाषा के कई शब्द हमारी भाषा में ऐसे घल-मिल गए हैं कि आज उनको अलग छाटना बड़ा मुश्किल हो रहा है। उर्दू में मूर्ति के लिए 'बूत' शब्द है, उस परसे 'बुतपरस्ती', 'बुतकदा' आदि शब्द बने हैं जिनका प्रयोग क्रमश; मूर्तिपूजा और मंदिर के लिए होता है। किन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात है कि उर्दू का यह 'बूत' शब्द कभी संस्कृत शब्द 'बुद्ध' से व्युत्पन्न हुआ था। बौद्ध धर्म का प्रचार जब अफ़घानिस्तान तक हुआ, तब वहां के बौद्ध विहारों में 'बुद्ध' की असंख्य मूर्तियां थी। वे लोग 'बुद्ध' का उच्चारण 'बूत' करते थे। "बूद्ध" की मूर्ति के लिए 'बुत' शब्द प्रचलित हुआ फ़िर उसमें अर्थ-विस्तार हुआ और सभी मूर्तियों को 'बुत' कहा जाने लगा। [35] कमरा, तोप आदि शब्द तुर्की भाषा के हैं।[36] आदमी, औरत, कमीज़, मालूम, गरीब ये शब्द अरबी भाषा के है। कमीना, गरमी, उस्तरा आदि शब्द फ़ारसी के हैं। किन्तु अध्ययन की सुविधा के लिए अरबी-फ़ारसी शब्दों का अध्ययन भी हम उर्दू के अंतर्गत करेंगे। 'राग-दरबारी' मे कई श्ब्द उर्दू के है जिनमे से कुछेक को हम यहां उदाहरण-स्वरूप रख रहे है-'दुकान, फुरसत,देहात, कोशिश, दारोगा, निगाह, आदमी, यकीन, बेईमान, बाइज्जत, चिडीमार, शरीफ़, वकील, कायदा, दौर-दौरा, करिश्मा, भीखमखेडवी (यह उर्दू परंपरा है, लखनवी, लुधियानवी आदि) तीसमारखां, खुदाया, जमाना, गवाह, दस्तखत, फ़िराक (चक्कर), उसूल, खुश्बू, कलमदान, कमजोर, मुरव्वत,अदालत, मुकदमा, बुजुर्ग हकीम, नुत्फ़, बेगम साहिबा, इन्साफ़, खुदा की कसम, लाजवाब, मुआइना, मुरादाबादी, बेवकूफ़, तजुर्बेकार, पाखाना, माशूक, गलत, खतरा, खिलाफ़, दरख्वास्त, खुमार, बरामदगी, फ़र्द, कसाला (कष्टपूर्ण) , परवाह, दीवानी, तबादला, मेवाफ़रोश, तहसीलदार, बदकलाम, दरशिकमी, होशियार, गबन,

गुटबन्द, इल्जाम, फ़रीक (झगडालू स्वभाव का व्यक्ति), मुआफ़िक, रेहन, लौंडा, दगाबाज़, इस्तीफ़ा, शराबखाना, कहवाघर, जहन्नुम।[37]

(झ) अंग्रेजी शब्दावली: उर्दू की भांति अंगेजी के भी कई सारे शब्द हमारी भाषा में मिल गए हैं और हमारी रोजमर्रा की ज़िन्दगी का हिस्सा बन गए हैं। कुछ शब्दों ने तो हमारी भाषा के संस्कार भी ग्रहण कर लिए हैं, यथा—लालटेन (लेंटर्न), रपट (रिपोर्ट), गुस्टन (गुड्ज ट्रेन) कोट-पतलून, फ़ौन्टपेन, लंबरदार, इजनेर, डाक-साब, अंडरवेर-अंडरवेल (अण्डरवियर) आदि-आदि।[38] 'राग दरबारी' उपन्यास में भी अंग्रेजी के कई शब्द उपल्ब्ध होते है जिनकी एक संक्षिप्त-सी सूची यहां प्रस्तुत है --

पट्रोल-स्टेशन, पैसेन्जर ट्रेन, गियर, ब्रेक, हार्न, अफ़सर(ओफ़िसर), मैनेजिंग डायरेक्टर, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, इण्टरमिडियेट, चेयरमैन, ओवरहालिंग, स्क्रीनिंग, स्लीपिंग-सूट, अण्डरवियर, प्रोपेगण्डा, ए. डी. ओ., सिम्बोलिक मोडर्नाइजेशन, माल एवेन्यू, फ्रैम्पटन स्कैयर, मैथडोलोजी, लेक्चरों (लेक्चर का ब.व. देशी ढंग से), हैण्डग्रिनेड, कोओपरटिव यूनियन, इवैल्युएशेन, कोओर्डिनेशन, डबटेलिंग, गुड नाइट, ड्रिल-मास्टर, सुपरिण्टैनडेण्ट, मास्टर-साहब (देशीकरण), मिनिस्ट्री, गैस्ट्रोइन-ट्राइटिस, गोल्फ़, क्राइसिस आफ़ कांशस, क्राइसिस आफ़ फ़ेथ, हाईकोर्ट, सुप्रिम कोर्ट, ग्राण्ट, इण्टरमीजिएट, ए. में. ले. (एम एल ए –का देशीकरण), स्पेलिंग, होलीडे, पेयर, फ़्लश, रन, रनिग फ़्लश, ट्रेल, डेफ़िसिट फ़ाइनांसिंग, वैल्यू, ग़ार्ड आफ़ ओनर, रिसर्च-प्रोजैक्ट, कार्ल जेस्पर्स, बालिश्टर(बेरिस्टर का देशीरुप), मैजिस्ट्रेट, एक्सपर्ट, पब्लिक-प्रोसिक्यूटर, प्रेक्टिस, इसोसिएशन, पिस्तोल, इस्टूडेण्ट (स्टूडेण्ट का देशीरूप), क्लच, एक्सिलेटर, टेरिलीन, मिलिटरी फ़ार्म, डिप्टी डायरेक्टर (डेप्युटी डायरेक्टर का देशीरूप) असिस्टेंस सेल्स टेक्स का आफ़िसर, डिस्ट्रिक्ट एण्ड सेशन जज, आर्टिफ़िशल इन्सेमिनेशन (ए.आई.), यूथ फ़ेस्टिवल, स्कोच, ट्रांजिस्टर।[30]

यहां एक और तथ्य की और भी ध्यान चाहूंगी कि अंग्रेजी महीने 'सप्टेम्बर', 'ओक्टोबर', 'नवेंबर', और 'डीसेम्बर' संस्कृत के 'सप्तम्', 'अष्टम्',

'नवम्' और 'दशम्' से साम्य रखते हैं क्यों कि वास्तव में रोमन केलेण्डर में पहले दश ही महीने थे और ये महीने भी सातवें, आठवें, नौवें और दशवें ही रहे है। रोमन सम्राट जुलियस सिज़र और उनके भजीजे ओगस्टस के नाम पर 'जुलाई' और 'ओगस्ट' ये दो महीने बाद में जुड़े है।[40] यह कहना इसलिए आवश्यक था कि हजारों साल पहले संस्कृत और ग्रीक-लेटिन-अवेस्ता के कई शब्दों मे आश्चर्य जनक समानता मिलती है और इसीलिए शायद उक्त भाषाओं को भारोपीय भाषा-परिवार के अतर्गत रखा गया है।[41]

(ट) संस्कृत-शब्दावली: यह तो सर्वविदित तथ्य है कि हिन्दी का जन्म मूलत: सस्कृत से हुआ है। संस्कृत से शौरसेनी प्राकृत और शौरसेनी प्राकृत से शौरसेनी अपभ्रंश होते हुए आधुनिक हिन्दी तक की यात्रा तय हुई है। अंत: आज भी हिन्दी में लगभग तीस-चालीस प्रतिशत शब्द संस्कृत के मिलते है। दिन, दिवस, रात्रि, नदी, सूर्य, चन्द्र, नर, नारी, प्रकृति, शनि, रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र आदि कई शब्द हैं जिनका हम अपने दैनंदिन जीवन में न जाने कितनी बार प्रयोग करते हैं। ऐसे शब्दो को हम 'तत्सम' कहते हैं। 'तत्सम' अर्थात उसके बराबर या वही। किन्तु कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो संस्कृत 'तत्स्म' शब्द से कुछ परिवर्तित होकर आज प्रयुक्त हो रहे हैं, ऐसे शब्दों को हम 'तदभव' कहते हैं, अर्थात 'उससे उत्पन्न'। ऐसे ढेर सारे शब्द है जिनकी व्युत्पत्ति भी शायद हम नही जानते। भाषा विज्ञान मे इसको लेकर एक अलग शाखा चल पड़ी है, उसे व्युत्पत्तिशास्त्र ( ) कहते हैं। कुछ शब्दों का उल्लेख जिज्ञासा-संतुष्टि हेतु कर रही हूँ -- इतवार, (आदित्यवार), वार (वासर), काम (कर्म), भगत (भक्त), भात (भक्त), नारंगी (नागरंगिका), आम (आम्र), अमरूद (अम्रुत), सांप (सर्प), गांव (ग्राम), सौ (शतक), बिच्छू (वृश्चिक), ओझा (उपाध्याय), झा (अध्यापक), चौबे (चतुर्वेदी), दुबे (द्विवेदी), सात (सप्त), आठ (अष्ट) आदि-आदि।[42] यहां हमारा उपक्रम 'राग दरबारी' उपन्यास से कुछ संस्कृत 'तत्सम' शब्दों को अलग से छांटने का है-

वर्तमान, शिक्षा, पद्धति, उत्साह, व्यक्तित्व, सुदूरपूर्व, राजनीतिज्ञ, ब्रह्मचर्य, वीर्य, सचित्र-विज्ञापन, प्रयोग, साहित्य, अध्ययन, भोजन, शयन, नित्यकर्म, व्यायाम,

शीलभंग, परिप्रेक्ष्य, युगबोध, कार्तिक-पूर्णिमा, महिषासुरमर्दिनी, समन्वयवाद, भावमुग्ध, संगीत-सभा, प्रजातंत्र, धृत, व्याख्यान, किन्तु, परन्तु, तथापि, नपुंसक, पूर्ववत्र, काशीफ़ल, कुष्माण्ड, विमान, आकाशगामी यान, बुद्धिजीवी, खाद्य-समस्या, खाद्य-विज्ञान, जीर्णोद्वार, ब्राह्मण, शूद्र, सिद्धान्त, मलमूत्र-त्याग, प्राचीनऋषि-संस्कृति, पल्लव-शयनतले, शिवलिंग, त्रयम्बक, सुगन्धिमय, पुष्टिवर्धन, अमृतत्व, याचिका, वैश्य, जातिप्रथा, नित्यप्रति, गजानन, इन्द्र, सहस्त्राक्ष, अर्थशास्त्र, संपादक, शुभचिंतक, ज्येष्ठपुत्र, अन्तर्जातीय, अश्लील, दुर्व्यवहार, बहुमूत्र, धर्मयुद्ध, विश्वास, भिष्म पितामह, भरतनाट्यम आदि-आदि।[43]

कहीं-कहीं तो कई-कई वाक्य आये हैं। यथा-ब्राह्मे मुहूर्त उत्तिष्ठेत जीर्णाजीर्ण निरूपयेत, परचंक्रमर्ण हितम। (टहलते हुए लौटना), निम्बस्य तिक्तके श्रेष्ठ: क्वाये बब्बुलस्तथा (सुखोष्णोदक) गण्ड्षै: जायते वस्त्रलाघवम (गुनगुने पानी से कुल्ला करना)[44], त्येन त्यक्तेन भुंजीथा (त्याग द्वारा भोग करना)[44]

(ठ) शब्द-सहचयन (Word-Association):

वैसे तो 'शब्द-सहचयन' कथानक-विधि का एक अंग है।परंतु उसमें किसी 'शब्द' के जरिये कथा का या व्यंग्य का व्यापार आगे विकसित होता है, इसीलिए 'शब्द-विचार' के अंतर्गत उस पर विचार करने का उपक्रम रखा है, क्यों कि आखिर यहां खेला तो शब्द का ही है।

'राग दरबारी' मे ऐसे कई स्थान हैं जहां किसी शब्द का उल्लेख होता है और फ़िर उसके द्वारा लेखक अपने व्यंग्य के पथ पर अग्रसर होता है। परंतु यहां स्थानाभाव के कारण केवल दो-तीन, उदाहरण से काम चलायेंगे। पंडित राधेलाल 'काना' की बात दो-बात निकलने पर अचानक 'परंपरा' शब्द की और लेखक का ध्यान जाता है और शुरू होती है उनकी व्यंग्यबाजी। यथा—

"यह हमारी प्राचीन परंपरा है, वैसे तो हमारी हर बात प्राचीन परंपरा है, कि लोग बाहर जाते हैं और ज़रा—ज़रा सी बात पर शादी कर बैठते हैं। अर्जुन के साथ चित्रांगदा आदि को लेकर यही हुआ था। यही भारतवर्ष के प्रवर्तक भरत के पिता दुष्यंत के साथ हुआ था। यही ट्रिनीडाड और टोबैगो, बरमा और बैकोंक

जाने वालों के साथ होता था, यही अमरीका और यूरोप जानेवालों के साथ हो रहा है और यही पंडित राधेलाल के साथ हुआ। अर्थात अपने मुहल्ले में रहते हुए बिरादरी के एक इंच भी बाहर जाकर शादी करने की कल्पना-मात्र से बेहोश हो जाते हैं, वे भी अपने क्षेत्र से बाहर निकलते ही शादी के मामले में शेर हो जाते हैं। अपने मुहल्ले में देवदास पार्वती से शादी नहीं कर सका और एक समूची पीढ़ी को कई वर्षों तक रोने का मसाला दे गया था। उसे विलायत भेज दिया जाता तो वह निश्चय ही बिना हिचक किसी गोरी औरत से शादी कर लेता। बाहर निकलते ही हम लोग प्राय: पहला काम यह करते हैं कि किसीसे शादी कर डालते हैं और फ़िर सोचना शुरू करते हैं कि हम यहां क्या करने आये थे। तो पं.राधेलाल ने भी, सुना जाता है एक बार पूरब जाकर कुछ करना चाहा था, पर एक महीने में ही वे इस 'कुतिया से शादी करके शिवपालगंज वापस लौट आये।"[45]

इसीतरह एक स्थान पर खन्ना मास्टर के संदर्भ में 'इंसानियत' शब्द का प्रयोग आता है। खन्ना मास्टर ने प्रिंसिपल की किसी बात को लेकर कहा था: "क्या यही आपकी इंसानियत है?"[46] तब बद्री पहलवान कहते है-"प्रिंसिपल ने गाली दी होगी। उसीके जवाब में उसने इंसानियत की बात कही होगी। यह खन्ना इसी तरह की बात करता है। साला बांगडू है।"[47] इसी संदर्भ में बद्री पहलवान आगे कहते है—"यहा जो भी क-ख-ग-घ पढ़ लेता है, उर्दू मूंकने लगता है। बात-बात मे इन्सानियत इन्सानियत करता है। कल्ले मे जब बूता नही होता, तभी इन्सानियत के लिए जी हुड़कता है।"[48] फ़िर इसी संदर्भ में लेखक की व्यंग्य-यात्रा चल पड़ती है-

"शिवपालगंज में इन दिनों इन्सानियत का बोलबाला था। लौण्डे दोपहर की घनी अमराइयों में जुआ खेलते थे। जीतने वाले जीतते थे, हारने वाले कहते थे, 'यही तुम्हारी इन्सानियत है? जीतते ही तुम्हारा पेशाब उतर आता है। टरकने का बहाना ढूंढने लगते हो।---कभी-कभी जीतने वाला भी इन्सानियत का प्रयोग करता था। वह कहता, 'क्या इसीका नाम इन्सानियत है? एक दांव हारने में ही पिलपिला गये। यहां चार दिन बाद हमारा एक दाव लगा है तो उसीमें हमारा पेशाब बन्द कर

दोगे...... ताड़ीघर में मजदूर लोग सिर को दायें-बायें हिलाते रहते। 1962 में भारत को चीन के विश्वासघात से जितना सदमा पहुंचा था, उसी तरह के सदमें का दृश्य पेश करते हुए वे कहते, 'बुधुआ ने पक्का मकान बनवा डाला। कारखानेवालों के ठाठ है। हमने कहा पाहुन आये हैं। ताड़ी के लिए दो रूपये निकाल दो, तो उसने सीधे बात नहीं की, पिछल्ला दिखा के चला बताओ नगेसर, क्या यही इन्सानियत है?... यानी इन्सानियत का प्रयोग शिवपालगज मे उसी तरह चुस्ती और चालाकी का लक्षण माना जाता था जिस तरह राजनीति में नैतिकता का।"[49]

इसी तरह 'भुनभुनाना', 'नैतिकता', 'न उखड़ने वाला गवाह', 'ग़बन', 'समय-समय बलवान है, नहीं मनुष्य बलवान', जैसे जुम्लों को लेकर लेखक अपनी व्यंग्य-बानी के चाबुक फ़टकारने लगते हैं।

(ड) मुहावरों का प्रयोग: मुहावरे भाषा की लक्षणा-शक्ति को धार देते है। मुहावरों के प्रयोग के कारण भाषा में एक प्रकार का चुलबुलापन आ जाता है। उसके कारण भाषा अधिक प्रभावशाली बनती है। भारतीय क्रिकेट-टीम ने विदेशी टीम को बुरी तरह से हरा दिया, यह एक सामान्य कथन हुआ। पर इसे यदि यों कहा जाय- "भारतीय टीम ने विदेशी टीम के छक्के छुडा दिये"- तो बात मे एक 'दम' पैदा हो जायेगा। कहावत-मुहावरों का प्रयोग ही प्रेमचद की शैली मे जान डाल देता था। वैसे 'कहावत-मुहावरे' का प्रयोग द्वन्द-समास के रूप मे होता है, किन्तुं यहा हम उभय की चर्चा अलग-अलग उपशीर्षकों के अंतर्गत करेंगे, क्यो कि कहावत सम्पूर्ण वाक्य है, जब कि 'मुहावरा' पुरा वाक्य नही, बल्कि कुछ शब्दों का समूह होता है। 'मुहावरे' को गुजराती में 'रूढि-प्रयोग और अंग्रेजी में Idiom कहा जाता है। 'रूढ़ि-प्रयोग' इसलिए कि भाषागत रूढ़ि के कारण उसका प्रचलन किसी भाषा या समाज-विशेष में चल पड़ता है, जैसे-वह तो गधा है-तो यहां 'गधा होना' मुहावरा मूर्ख के लिए चल पड़ा है। यह एक अलग खोज का विषय प्राणीशास्त्रियों के लिए कि वास्तव में गधा मूर्ख प्राणी है कि बुद्धिमान या सहिष्णु? खैर, यहां हमारी चर्चा 'मुहावरों' के सन्दर्भ में चल रही है। 'हिन्दी मुहावरे और लोकोक्ति कोश' में मुहावरे

के संदर्भ में कहा गया है—"पं. रामदहिन मिश्र, श्री कामता प्रसाद, पं. ब्रह्मस्वरूप दिनकर, पं.अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' शब्दर्षि बाबू रामचन्द्र वर्मा तथा अन्य अनेक विद्वानों ने 'मुहावरा' की व्युत्पत्ति तथा परिभाषा पर विशेष रूप से विचार किया है। इन महानुभावों तथा विभिन्न कोशों की परिभाषाओं पर विस्तृत गहन विचार करते हुए डॉ. ओमप्रकाश गुप्त ने अपने विद्वतापूर्ण प्रबंध 'मुहावरा-मीमासा' में मुहावरा की परिभाषा इस प्रकार की है—"प्राय: शारीरिक चेष्टाओं, अस्पष्ट ध्वनियों, कहानी और कहावतों अथवा भाषा के कतिपय विलक्षण प्रयोगों के अनुरुप या भाषा के गढे हुए रूढ वाक्य, वाक्यांश अथवा शब्द इत्यादि को मुहावरा कहते हैं। जैसे-हाथ पैर मारना, सिर धुनना, ही ही क़रना, ग़टागट निगल जाना टेढ़ी खीर होना, अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना, दूध के जले होना, नौ की लकड़ी तेरह खर्च करना, अंगारों पर लोटना,आग से खेलना इत्यादि।' (मुहावरा-मीमांसा: डा.ओमप्रकाश गुप्त: पृ-49)"[50]

अस्तु, हमारा उपक्रम यहां 'राग दरबारी' उपन्यास से कुछ मुहावरों को अलग करने का है। यहां यह कह देना आवश्यक समझती हूं कि हमने उपन्यास की व्यंग्यात्मक प्रकृति को लक्षित करते हुए कुछ विशेष मुहावरों का ही उल्लेख किया है: -

दुकानदारिन की सारी सभावनाओ को देख जाना (नया मुहावरा), घास खोदना, एक निगाह से देखना, थे है और रहेगे (न.मु), खानदानी हरामी होना, वीर्य की नदियां बहना (न.मु), कानी कौडी न मिलना, गजहों के चोंचले, फ़ुस-फ़ुस करना, पार्टीबन्दी के उस्ताद होना, बाप तक का नाम मालूम न होना, तीसमारखां होना, चू-चपड़ करना, किसीके नाम में लाल लंगोटवाले क जोर होना (न.मु), अंधेरे-उजेले में, ठिल्लें मारकर हंसना, दिनों का लद जाना, बांगडूपन दिखाना, कभी न उखडने वाला गवाह (न.मु), ह्रदय पर कब्जा करना, टांय-टांय करना, टिपिर-टिपिर करना, पीठ में छुरा भौंकना, हमारी पाली लोमड़ी और हमारे ही घर में हुआ-हुआ (न.मु), 'हे-हें-ठें-ठें-फ़ें-फ़ें' करना, क-ख-ग-ध पढ़ लेना (न.मु), कल्ले में बूते का न होना, एक ही दांव में पिलपिला जाना, पिछल्ला दिखाके चल देना,

फ़ांय-फ़ांय करना, दोगले की औलाद होना, टिलटिलाना, बंदरहाव करना (पति-पत्नी का झग़ड़ा, न.मु), हें-हें करना, बात एक बताशे फ़ोड़ना, छातियों के आकार-प्रकार का हालचाल जानना (स्त्रियों की छातियों से छेड़छाड़ करना, न.मु), समन्वयवाद के अनुयायी (मिलावट करने वाले,_न.मु) राहचलन्तू विधा (न.मु), तिकड़म लडाना, किसीके बिना उखाड़े एक रोआं तक न उखड़ना, पालक-बालक की कैरियर की शुरुआत होना, घसड-फ़सड़ होजाना, गिचिर-पिचिर में पड़ना, भुनभुनाते रहना, नपुंसकों की भाषा, किन्तु-परन्तु की भाषा में बोलना(दूध-दहीं दोनों में पैर रखना), उखड़ी-उखड़ी बातें करन, कलेजा मजबूत करना, अपनी टेंट से जाना, सिलिर-सिलिर करना, टके की दुकान, तेली-तंबोली की औकात, अपने बाप की औलाद न होना, किसीको घास न डालना, फ़ाइलेरिया होना (न.मु), भभ्भड़ मचजाना, विशेषज्ञों वाली प्रेक्टिस करना (न.मु), कांइयापंथि दिखाना, तुम-तड़ाक करना, जवानी पर पिल्लों का मूतना (न.मु), अड़-तालीस घण्टे का दिन होना (न.मु), कातिक की कुतिया होना (छिनाल होना, नम), युधिष्टिर का बाप बनना (न.मु), लौडों की दोस्ती करना, तबीयत घिस-घिर करने लगना, भरत-मिलाप करा देना (पीटवाना,न.मु), मेंढ्क को जुकाम होना, बहुमूत्र का रोग होना (न.मु) किचड़ की चापलूसी करना, अपने घर का बाग़ होन (स्वयं की कोई सस्था होना), जहन्नुम में जाना आदि-आदि।[51] (पुनश्च: न.मु,=नया मुहावरा)

वाक्य-विचार: शब्द के बाद की इकाई वाक्य है। वाक्य, एक या एक से अधिक शब्दों के संयोजन से निर्मित होता है। वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि व्याकरणिक पद होते हैं। पर इन सबमें क्रिया मुख्य है। क्रिया को हम वाक्य का प्राण कह सकते हैं। बिना क्रिया के वाक्य-रचना संभव ही नहीं है। एक शब्द का भी वाक्य हो सकता है, जैसे-चलो... कहो, बोलो इत्यादि। एक से अधिक शब्दो के रहने पर भी वाक्य कभी-कभी वाक्य नहीं बनता है, जैसे—"श्री लाल एक शुक्ल 'राग दरबारी' है व्यंग्यात्मक प्रणीत द्वारा उपन्यास"--इसे वाक्य नहीं कह सकते, हालां कि उसमें नौ शब्द हैं। इन नौ शब्दों से वाक्य तब बनेगा जब उसमें कोई व्याकरणिक व्यवस्था स्थापित होगी, जैसे—"श्री लाल शुक्ल द्वारा प्रणीत'राग

दरबारी' एक व्यंग्यात्मक उपन्यास है।" अर्थात शब्दों को जब व्याकरणिक व्यवस्था या तरतीब में रखा जाएगा, तभी वाक्य बनेगा।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने वाक्य को इस प्रकार परिभाषित किया है— 'वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है जिसमें एक या अधिक शब्द(पद) होते है तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होते है, साथ ही उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कम-से-कम एक समापिका क्रिया अवश्य होती है।[52]

उपर्युक्त परिभाषा से वाक्य के निम्नलिखित अभिलक्षण स्पष्ट होते हैं - (1) वाक्य भाषा की सहज इकाई है, (2) वाक्य में एक शब्द (पद) भी हो सकता है और एक से अधिक भी। (ऊपर एक शब्द के कुछ वाक्य दिए गए है) (3) वाक्य में अर्थ की पूर्णता हो भी सकती है और नहीं भी। देखिए - (क) दो और दो चार होते है और (ख) दो और दो छ: होते है। यहां प्रथम वाक्य अर्थपूर्ण है, दूसरा नहीं, परन्तु व्याकरण की दृष्टि से उसे वाक्य तो कहा ही जाएगा। (4) वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण होता है। (5) व्याकरणिक पूर्णता कभी-कभी संदर्भ पर भी निर्भर करती है, जैसे-'राम-तुमने फ़ल खाये? सीता-नहीं, आपने?' यहां सीता का वाक्य यो तो अपूर्ण माना जाएगा। पर संदर्भ के साथ देखने पर उसे पूर्ण वाक्य माना जाएगा। और (6) वाक्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष कम-से-कम एक क्रिया होती है।[53]

वैसे तो भाषाविज्ञान मे 'वाक्य-विज्ञान' एक अलग से शाखा है और उसके कई पक्षो पर बात हो सकती है, परंतु यहाँ हमें 'राग दरबारी' उपन्यास के संदर्भ में उसके कुछेक पक्षों पर विचार करना है, अंत: यहा हम निम्नलिखित मुद्दों पर चर्चा करेंगे—(क) वाक्य के प्रकार –राग दरबारी के संदर्भ में, (ख) व्यंग्य-वाक्य, (ग) सूत्रात्मक वाक्य, (घ) कहावतों का प्रयोग।

(क) वाक्य के प्रकार-'राग दरबारी' के संदर्भ में : रचना के आधार पर वाक्य के चार प्रकार हो सकते हैं -- (1) सरल वाक्य-इस वाक्य मे एक ही क्रिया होती है, जैसे - (1) वहीं एक ट्रक खड़ा था, (2) रूप्पनबाबू स्थानीय नेता थे, (3) बेईमान मुन्नु बड़े ही बाइज्जत आदमी थे, (4) शहराती लड़के बड़े सीधे होते हैं, (5)

वैद्यजी का एक पेशा वैद्यक का भी था।[54] उपर्युक्त पांचों वाक्य 'राग दरबारी' से है और वे सभी सरल वाक्य के उदाहरण है क्योंकि उन सभी में एक-एक क्रिया है।

(2) मिश्र वाक्य (Complex Sentence) : मिश्र वाक्य में एक से अधिक वाक्य होते है। इनमें एक प्रधान वाक्य होता है और दुसरे उससे आश्रित उपवाक्य होते है, जैसे-

1. शहर का किनारा, उसे छोड़ते ही भारतीय देहात का महासागर शुरु हो जाता था।
2. उसे देखते ही यकीन हो जाता था, इसका जन्म केवल सड़कों के साथ बलात्कार करने के लिए हुआ है।
3. वर्तमान शिक्षा-पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।
4. उनके नेता होने का सबसे बड़ा आधार यह था कि वे सबको एक निगाह से देखते थे।
5. हमारी यूनियन में ग़बन नहीं हुआ था, इस कारण लोग हमें संदेह की दृष्टि से देखते थे।

उपर्युक्त सभी वाक्यो मे एक प्रधान वाक्य है और दूसरा गौण या उपवाक्य । अत: ये सभी मिश्र वाक्य के उदाहरण है।

(3) संयुक्त वाक्य (ComBined Sentence): इसमे एक से अधिक वाक्य और क्रियाएं होती हैं, जैसे-

1. वैधजी थे, है और रहेंगे।
2. ड्राइवर ने खिड़की के बाहर थूक दिया और साफ़ आवाज़ में सवाल किया, 'आप सी आई डी में काम नहीं करते?
3. उसने बेला के बारे में कुछ भी जानने से इनकार कर दिया और कहा कि लड़की पढ़ी-लिखी हैतो अच्छा है और नहीं है तो बहुत अच्छा है, क्योकि मुझे उससे मास्टरी नही करानी है।

4. अपने यहां की मूर्ति-कला पर और चाहे जो कुछ कहा जाये,उसके विरुद्ध कोई यह नहीं कह सकता कि हमारे देश की मूर्तियों में लिंग-भेद का कोई धपला है।

5. बहुत समझाने पर प्रजातत्र उठकर उनके तख्त के कोने पर आ जाता है और जब उसे इतनी सांत्वना मिल जाती है कि वह मुंह से कोई तुक की बात निकाल सके, तो वह वैद्यजी से प्रार्थना करता है कि मेरे कपड़े फ़ट गये है, मैं नगा हो रहा हूं।[56]

उपर्युक्त उदाहरणों में जितने भी वाक्य है उनमें एक से अधिक वाक्य और क्रियाएं है, अंत: उनको संयुक्त वाक्य की संज्ञा दे सकते हैं।

(4) उपवाक्य (Clause): जब दो या अधिक सरल वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाया जाता है तो उस एक वाक्य में जो अन्य वाक्य मिले होते है उनको उपवाक्य (Cause) कहा जाता है। उपर्युक्त मिश्र और संयुक्त वाक्यों में मुख्य वाक्य के अतिरिक्त जो दूसरे वाक्य हैं उनको उपवाक्य कह सकते हैं।

एक दूसरी दृष्टि से भी वाक्य के प्रकार बताए गए हैं। उसके हिसाबसे वाक्य के सात प्रकार होते है। यथा-

1. विधानसूचक
2. निषेधसूचक
3. आज्ञासूचक
4. प्रश्न सूचक
5. विस्मयसूचक
6. संदेहसूचक और
7. इच्छा सूचक।[57]

अब 'राग दरबारी' के संदर्भ में उनके उदाहरणों पर विचार किया जायेगा।

1. विधानसूचक वाक्य: यहां सीधा-सरल विधान होता है, जैसे-

(1) ट्रेक के ड्राइवर और क्लीनर एक दुकान के सामने खड़े होकर चाय पी रहे थे।

(2) उसका नाम मंगल था, पर लोग उसे सनीचर कहते थे।

(3) इसीको 'ठांय' कहते है।[58]

2. निषेधसूचक वाक्य: यहां नकरात्मक विधान होता है। यह विधानसूचक वाक्य का विलोम है, जैसे-

a. शोषण के प्रतीक इक्केवाले उन्हें (रूप्पनबाबू को) शहर पहुंचाकर किराया नहीं मांगते थे

b. उनकी राय में ब्रह्मचर्य न रखने से सबसे बड़ा हर्ज़ यह होता था कि बाद मे आदमी चाहने पर भी ब्रह्मचर्य का नाश करने लायक नहीं रह जाता था।

c. लड़की सुंदर है तो अच्छा है और नहीं है तो बहुत अच्छा है, क्योंकि मुझे उसे कोठे पर नहीं बिठाना है।[59]

3. आज्ञासूचक वाक्य: इस प्रकार के वाक्य में आज्ञा या हुकम किया जाता है, जैसे-

a. खन्नाजी और मालवीयजी, मैं औरो से नहीं कहता, केवल आपसे कह रहा हूं, आपको इस्तीफ़ा देना होगा।

b. यह गियर बार-बार फ़िसलकर न्यूटरल ही मे घुसता है, देख क्या रहे हो ? जरा पकड़े रहो इसे।

c. यहां पेड़ के पीछे से एक काला-कलूटा, गठी देह का जवान निकलकर मेरे सामने आया और बोला, 'जो कुछ हो, चुपचाप रख दो, धोती-कुरता भी उतार दो। (सनीचर और डकैतवाली घटना)[60]

4. **प्रश्नसूचक वाक्य :** इसे प्रश्नार्थक वाक्य भी कहते है। इसमें पूर्णविराम के स्थान पर प्रश्नार्थक चिह्न(?) रहता है। उसमें कोई प्रश्न पूछा जाता है, जैसे-

a. तुम्हारी ही वजह से मेरी चेकिंग हुई है और तुम्हीं मुझसे इस तरह बात करते हो ? तुम्हारी यही तालीम है ?

b. क्या आजकल के चोट्टे सचमुच ही ऐसे तीसमारखां है?

c. आप लोग देश का उद्धार इसी प्रकार करेंगे ? यह 'किन्तु', 'परन्तु', 'तथापि' यह सब क्या है? (वैद्यजी का पुण्य-प्रकोप)[61]

d. विस्मयसूचक वाक्य: इस वाक्य में कोई आश्चर्यजनक घटना का वर्णन होता है और उसके अंत में आश्चर्य-वाचक चिह्न (!) रखा जाता है। जैसे

(1) खोलने कालिज चले, आटे की चक्की खुल गयी!

(2) यहां लंगड कहता था, धरम से नकल लूंगा। बाबू कहता था, धरम से नकल दूंगा, फ़िर भी लड़ाई चल रही थी!

(3) बेईमानी और बेईमान सब और से सुरक्षित हैं, आज का दिन अड़तालीस घण्टे का है![62]

(6) **संदेहसूचक वाक्य:** इस वाक्य के द्वारा संदेह व्यक्त किया जाता है।कविता में इसे ही 'संदेह अलंकार कहते हैं। इसमें निश्चयात्मकता नहीं होती है। जैसे--

1. बिना दो हाथों के ताली नहीं बजती, तुमने भी कुछ-न-कुछ जरूर किया होगा।
2. मुझे तो इसका सम्बन्ध शिक्षा-विभाग से जान पड़ता है।[63]
3. क्यों मियां अशफ़ाक, क्या राय है ? माफ़ किया जाय ?

(7) **इच्छासूचक वाक्य:** इसमें अपनी इच्छा व्यक्त की जाती है या किसीके लिए प्रार्थना की जाती है या किसीको आर्शीवाद देने का भाव होता है, जैसे-

1. सबकी राय लेकर मे लडके की कीमत अंतिम रूप मे दस दिन मे बता दूंगा और भगवान चाहेगा तो हम और आप समधी हो जायेंगे।

2. हे शंकर इन हाकिमों की भ्रष्ट बुद्धि में तुम अपना भंग और धतूरा और डालकर उसे कुछ और भ्रष्ट कर दो।

3. हे त्रयंबक, सुगन्धिमय, पुष्टिवर्धन, मुझे मृत्यु के संग से वैसे ही तोड़ दो जैसे डण्ठल से खीरा तोड़ा जाता है।[64]

(ख) व्यंग्य-वाक्य: 'राग दरबारी' एक व्यंग्यात्मक उपन्यास है। उसे व्यंग्यात्म्क उपन्यासों का प्रतिमान माना गया है।[65] अत: ऐसे उपन्यास में 'व्यंग्य-वाक्यों' का

बहुतायत से मिलना स्वाभाविक ही कहा जायेगा। अत: 'भात-पतीली' न्याय से यहां कुछ व्यंग्य-वाक्यों को प्रस्तुत करने का हमारा उपक्रम रहेगा। यथा--

(1) ड्रायवर साहब, तुम्हारा गियर तो बिल्कुल अपने देश की हुकूमत जैसा है। (2) वर्तमान शिक्षा-पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है, (3) बेईमान मुन्नू बड़े ही बाइज्जत आदमी थे। (4) वैद्यजी थे, है, और रहेंगे। (5) महाभारत की तरह,जो कहीं नही है वह यहां है, और जो यहां नहीं है वह कहीं नहीं है। (6) यह हमारी प्राचीन परंपरा है, वैसे तो हमारी हर बात प्राचीन परंपरा है, कि लोग बाहर जाते हैं और ज़रा-ज़रा सी बात पर शादी कर बैठते हैं। (7) स्त्री पेट के रास्ते से आदमी के दृदय पर कब्जा करती है। (8) जिस किसीकी दुम उठाकर देखो,मादा ही नज़र आता है। (9) कल्ले में जब बूता नहीं होता, तभी इन्सानियत के लिए जी हुड़कता है। (10) नैतिकता समझ लो कि यही चौकी है। (11) अछूत एक प्रकार के दुपाये का नाम है जिसे लोग संविधान लागू होने के पहले तक छूते नहीं थे। (12) पुरातत्व के विद्यार्थियों को गले के नीचे ही दो ऊंचे-ऊंचे पहाड़ देखने की आदत पड़ जाती है। (13) वे सब समन्वयवाद के अनुयायी थे और उन्होंने कसम खा ली थी कि वे बिना मिलावट के न तो कोई चीज बनायेंगे और न बेचेंगे। (14) मुरव्वत में मामला बिग़ड़ जाता है। (15) हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट की शौकीनी सबके बूते की बात है? एक-एक वकील करने मे सौं-सौ रडी पालने का खर्च होता है। (16) सोलह सौ सुअरो को निमत्रण देते घूम रहे है पर हालत यह है कि स्थान-विशेष में पाखाना तक नहीं है। (17) जैसे बुद्धिमत्ता एक वैल्यू है,वैसे ही बेवकूफ़ी भी अपने-आप मे एक वैल्यू है। (18) टके की दुकान पर कोई साला पिकासो थोड़े ही लटकायेगा। (19) शिवपालगंज में यह भी मशहूर था कि इस छोकड़े पहलवान को रूप्पन बाबू कुछ उसी तरह की छूट दिये है, जिस तरह सुना जाता है, कड़ी बात कहने की छूट सरदार पटेल को गांधीजी की तरफ़ से मिली हुई थी। (20) हाथी अपनी राह चले जाते हैं, कुत्ते भूंकते रहते है। (21) बेवकुग लोग बेवकूफ़ लोग बेवकूफ़ बनाने के लिए बेवकूफो की मदद से बेवकूफ़ों के खिलाफ़ बेवकूफ़ी करते हैं। (22) बेटा हम बीस लड़कों के बाप है, हमींको बताने चले हो औरत क्या चीज

होती है। (23) गिलहरी के सिर पर हुआ चू पड़े तो समझेगी, गाज गिरी है। (24) शहर का आदमी-सूअर-का-लेंड़—न लीपने के काम आय,न जलाने के। (25) योग्य आदमियों की कमी है, इसलिए आदमी को किसी चीज़ की कमी नहीं रहती। (26) मास्टर होकर मार खाने से कहां तक डरोगे? (27) चाहिए यह कि लीडर तो जनता की नस-नस से वाकिफ़ हो, पर जनता लीडर के बारे में कुछ न जानती हो। (28) जहां भी जाओगे, तुम्हें किसी खन्ना की ही जगह मिलेगी, बाबू रंगनाथ ?[66]

(ग) सूत्रात्मक वाक्य: जिस वाक्य में सिद्धान्त या नियम के रूप में कोई बात सूत्रबद्ध कर दी गयी हो, उसे सूत्रात्मक वाक्य कहते है। ऊपर जो वाक्य दिए गए है, उनमें कई ऐसे है, तथापि कुछेक वाक्यों को यहां दिया जा रहा है – (1) सैकण्डहेण्ड मशीन चौबीस घण्टे की निगरानी मांगती है। (2) वैद्यजी थे, है और रहेगे। (3) हर बड़े राजनीतिज्ञ की तरह वे राजनीति से नफ़रत करते थे। (4) परोपकार एक व्यक्तिवादी धर्म है। (5) स्त्री पेट के रास्ते से आदमी के ह्रदय पर कब्जा करती है। (6) मुरव्वत में मामला बिगड़ जाता है। (7) जैस पसु तैस बंधना। (8) टहलना काम है घोड़ी का, मर्द के बच्चे का नहीं। (9) कल के जोगी, चूतड़ तक जटा। (10) तेन त्यक्तेन भुंजीथा। (11) चाहिए यह कि लीडर तो जनता की नस-नस से वाकिफ़ हो, पर जनता लीडर के बारे में कुछ न जानती हो। (12) धर्मयुद्ध समझ की नहीं, विश्वास की बात है। (13) इस मुगालते में न रहो कि कीचड़ से कमल पैदा होता है, कीचड़ में कीचड़ ही पनपता है, वही फ़ैलता है, वही उछलता है।[67]

(घ) कहावतों का प्रयोग: कहावत को 'लोकोक्ति' भी कहते हैं। 'लोकोक्ति' का अर्थ होगा-लोगों द्वारा कही गयी या लोगों द्वारा प्रचलित बात। कहावतें सांसारिक जन-जीवन की अपज है। डा मोहनलाल उपाध्याय 'निर्मोही' ने कहावत की परिभाषा इस प्रकार दी है- 'लोकिक्ति या कहावत एक पूरा वाक्य होता है और अपनी स्वतंत्र सत्ता रखता है। इसका प्रयोग किसी कथन की पूर्ति में उदाहरण स्वरुप किया जाता है। जैसे बानावटी परहेज के लिए कहा जाय कि 'गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज' तो इस कथन में अधिक चमत्कार आ जाता है।[68] यहां हमारा

लक्ष्य 'राग दरबारी' में प्रयुक्त कहावतों को प्रस्तुत करने का है। यदि कोई कहावत नयी होगी तो कोष्ठक में(नयी कहावत का संक्षिप्त रूप न. क. दिया होगा। वैसे तो ढेर सारी कहावते है, किन्तु यहां प्रमुख कहावतों का ही उल्लेख किया जा रहा है-

(1) अखाड़े का लतमरूआ भी पहलवान हो जाता है। (न.क.) (2) इधर से आग खाओगे तो उधर से अंगार निकालोगे।(न.क.)। (3) कल के जोगी चूतड़ तक जटा। (4) गाय ही चली गई तो पगहे का क्या अफ़सोस (न.क.)। (5) गू खाए तो हाथी का,गधे का क्यो खाए? (6) घोड़ी की लात और मर्द की बात कभी खाली नहीं जाती। (7) जैस पसु तैस बंधना। (8) जिस किसीकी दुम उठाकर देखो मादा ही नज़र आता है (न.क.)। (9) बीस लड़कों के बाप को बताना कि औरत क्या चीज़ है? (न.क.) (10) यह जांघ खोलो तो लाज वह जांध खोलो तो लाज (न.क.) (11) मास्टर होकर मार खाने से कब तक बचोगे ? (न.म.) (12) सोलह सौ सूअरों को निमंत्रण देते घूम रहे है और स्थान-विशेष में पाखाना तक नहीं है। (एक अवधी कहावत का हिन्दी तर्जुमा)[69] (13) वर्तमान शिक्षा-पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है (न.क.) (14) सैकण्डहैण्ड मशीन चौबीस घण्टे की निगरानी मांगती है। (न.क.) (15) वैद्यजी थे,और रहेंगे। (न.क.) (16) हाथी आते है,घोड़े जाते है,बेचारे ऊँट गोते खाते है। (अवधी कहावत का हिन्दी अनुवाद) (17) महाभारत की तरह, जो कही नहीं है वह यहा है, और जो यहां नही है वह कही नहीं है। (यन्न भारते, तन्नभारते) (18) तुम हो सरकार के तो हम भी है दरबार के। (19) अधो में काना राजा। (20) स्त्री पेट के रास्ते से आदमी के हृदय पर कब्जा करती है। (21) सच्चाई छिप नहीं सकती बनावट के उसूलों से, खुश्बू आ नहीं सकती कागज के फूलों से। (22) नैतिकता समझ लो कि एक चौकी है। (23) चढ़ जा बेटा सूली पर। (24) अपनी जोरू को जो काबू में न रख पाया वह उमर भर बेचारा ही रहेगा। (25) जितना गुड़ घोलो उतना ही मीठा होगा। (26) देह पर नहीं लत्ता, पान खाये कलकत्ता (27) माशूकों के तीन नाम: राजा, बाबू, पहलवान।(उन दिनों शिवपालगंज में मशहूर कहावत) (28) हाथी अपनी राह चलते है कुत्ते भूंकते रहते हैं। (29) गिलहरी के सिर पर महुआ चू पड़े तो समझेगी

गाज गिरी है। (30) शहर का आदमी- सूअर का-सा लेंड़--- न लीपने के काम आये न जलाने के। (31) होशियार औआ कूडे पर ही चोंच मारता है। (32) लौड़ों की दोस्ती जी, का जंजाल।[70]

प्रोक्ति-विचार:

वाक्य के बाद भाषा की आगे की इकाई 'प्रोक्ति' है। अंग्रेजी में उसे 'Discourse' कहते हैं और भाषा-विज्ञान में उससे सम्बद्ध भाषा-विज्ञान को 'प्रोक्ति-विज्ञान' कहा गया है।[71] डा भोलानाथ तिवारी ने प्रोक्ति को इस प्रकार परिभाषित किया है-'तर्कपूर्ण क्रमयुक्त और आपस में आंतरिक रूप से सुसंबद्ध, एकाधिक वाक्यों की ऐसी व्यवस्थित इकाई को प्रोक्ति कहते है जो संदर्भ-विशेष में अर्थद्योतन की दृष्टि से पूर्ण हो।[72]

उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार प्रओक्ति में निम्नलिखित चार अभिलक्षण अवश्य होते हैं-(1) प्रोक्ति में एक से अधिक वाक्य होते है, (2) इन वाक्यों का क्रम तर्कपूर्ण होता है। (3) ये आपस में सुसंबद्ध — एक-दूसरे से जुड़े हुए- होते है। (4) ये वाक्य परस्पर मिलकर एक संदर्भ-विशेष की सृष्टि करते हैं।

यहां राग-दरबारी के संदर्भ में प्रोक्ति के अंतर्गत हम निम्न सूचित दो मुद्दों पर सोदाहरण चर्चा करेंगे— (क) प्रसंग-सहचयन (Eventual Association) और (ख) व्यग्योक्तिया।

(क) प्रसंग सहचयन (Eventual Association) **:** पूर्ववर्ती पृष्ठों में हम शब्द-सहचयन (Word-Association) की बात कर चुके है। शब्द-सह्चयन और प्रसंग-सहचयन में अंतर यह है कि शब्द सहचयन में किसी शब्द के निमित्त चर्चा आगे बढ़ती है, यहां पर किसी प्रसंग के निमित्त चर्चा अग्रसरित होती है। चर्चित उपन्यास में इसके कई उदाहरण मिलते हैं किन्तु यहां हम दो-एक की चर्चा करेंगे।

एक प्रसंग है 'कौडिल्ला-न्याय' वाला। छोटू पहलवान अपने पिता कुसहरप्रसाद की बुरी तरह से कुटाई करते है। इस बात को लेकर कुसहरप्रसाद पंचायत के पास जाते हैं, तब उन्हें शिवपालगंज की पंचायत जिस प्रकार का न्याय देती है उस संदर्भ में प्रिंसिपल साहब रंगनाथ को 'कौडिल्ला-न्याय' का किस्सा

सुनाते हैं, जो संक्षेप में इस प्रकार है—इकबार एक नवाब साहब का लड़का बीमार हो गया। डाक्टर, वैध, हकीम सबको दिखाया पर बिमारी थी कि ठीक होने का नाम ही न लेती थी। आखिरकार एक तजुर्बेकार बूढे ह्कीम साहब आये। उन्हों ने नवाब साहब से गुजारिश की कि उसके लिए उन्हें बेगम-साहिबा से अकेले में बात करनी पडेगी। सवाल बेटे की जिन्दगी का था और हकीम साहब बूढे थे, सो नवाब साहब मान गये। अकेले में हकीम साहब ने बेगम-साहिबा को पूछा कि अगरचे वह शाहजादे की जान बचाना चाहती है तो उनके प्रश्न का बिल्कुल सही-सही जवाब दे और फ़िर पूछा कि नवाबजादा सचमुच में किसके नुत्फ़े से पैदा हुआ है। तब सकुचाते हुए और नवाबसाहब को न बताने की शर्त पर बेगम-साहिबा बताती है कि वह एक भिस्ती के नुत्फ़े से पैदा हुआ है। 'मुआ ताज़ा-ताज़ा दिहात से आया था, और मालूम नहीं कि कैसे क्या हुआ कि...' हकीम साहब समझ गये। उन्हों ने शाहजादे की आंखों पर पानी का छिंटा मारा और कहा, 'अबे उठ ! भिश्ती की औलाद!' चौककर शाहजादे ने आंखे खोल दीं। उसके बाद हकीम साहब ने मैदान में जाकर कौड़िल्ला के कुछ पौधे उखाड़े और पीस कर पिला दिये। तीन दिन तक इसी तरह कौडिल्ला पीकर शाहजादा चंगा हो गया। तो यह है कौड़िल्ला न्याय की कहानी।[73]

दूसरा किस्सा है शिवपालगग के एक नवरत्न डाकू दूरबीन सिंह डकैत का। कभी उनके नाम में भी लाल लंगोटवाले का जोर बोल रहा था। सनीचर बाबू रगनाथ को इन्हीं का किस्सा सुनाता है कि एक बार रात के समय सनीचर बाबू रगनाथ को इन्हीं का किस्सा सुनाता है कि एक बार रात के समय सनीचर अपने गांव लौट रहे थे कि डाकुओं ने उनको घर लिया। डाकुओं ने उनकी धोती तक उतरवा ली। आखिर में डरते-डरते सनीचर उनको कहता है -- "बापु तुम नमक से नमक खा रहे हो । तुम हो सरकार के तो हम भी हैं दरबार के।" पूछने पर बताया कि वह 'गंजहा' है और दो-एक बार दूरबीन सिंह की और से लाठी भी चला चुका है। दूरबीन सिंह का नाम सुनते ही डाकुओं को जैसे सांप सूंघ जाता है। वे सनीचर को सारा माल लौटा देते हैं। इस पर रूप्पन बाबू सनीचर को कहते हैं कि फ़िर लगे

हाथ वह दूसरा किस्सा भी सुना ही दे जिससे साबित होता है कि 'समय समय बलवान है, नहीं मनुष बलवान। कि भिल्लन लूटी गोपिका, कि वही अरजुन वही बान॥ इस कथा में सनीचर पुन: एक बार ऐसे ही रात-बिरात फ़ंस गया था। उसने वही नमक से नमक वाली बात दोहरायी और डाकू दूरबीन सिंह के नाम को भुनाना चाहा, उस पर डाकुओं ने उसे दो लातें और मारीं और कहा, 'देख लो बेटा, यही छ: गोलीवाला हथियार (तमंचा) । देसी कारतूस तमंचा नहीं, असली विलायती... जाकर बता देना अपने बाप को । अन्धों में काना राजा बनने के दिन लद गये, अब वे पडे-ड़े खटिया पर रोते रहें। कभी अंधेरे-उजेले में दिख गये तो खोपड़ी का गुदा निकल जायेगा। समझ गये बेटा फ़कीरेदास ।[74]

(ख) व्यंग्योक्तियां: दूसरे उपन्यासों में 'भाषा' की बात करते हुए उसमें आयीं विशेष उक्तियों को 'सूक्तियां' के नाम से अभिहित किया जाता है, परन्तु 'राग दरबारी' एक व्यंग्यात्मक उपन्यास है। अतः यहाँ 'सूक्तियों' के स्थान पर व्यंग्योक्तियां मिलती है, तो यह स्वाभाविक ही है। ऐसी व्यंग्योक्तियों से पूरा उपन्यास भरा पड़ा है। ऊपर हमने 'वाक्य- विचार' के अंतर्गत 'व्यंग्य वाक्य' और 'व्यंग्य कहावतों' का यथास्थान जिक्र किया है। यहां हम उन 'व्यंग्योक्तियों' को लेंगे जिनमें एकाधिक वाक्यों का प्रयोग हुआ है और जिसे 'भाषा-विज्ञान' की शब्दावली मे 'प्रोक्ति' कहा जाता है। ऐसी उक्तियां भी बहुतायत से उपलब्ध होती है, अत: यहां कुछ चुनी हुई उक्तियो को प्रस्तुत करने का हमारा उपक्रम रहेगा—

(1) रूप्पन बाबू स्थानीय नेता थे। उनका व्यक्तित्व इस आरोप को काट देता था कि इण्डिया में नेता होने के लिए पहले धूप में बाल सफ़ेद करने पड़ते हैं। उनके नेता होने का सबसे बड़ा आधार यह था कि वे सबको एक निगाह से देखते थे। थाने में दारोगा और हवालात में बैठा हुआ चोर—दोनों उनकी निगाह में एक थे। उसी तरह इम्तिहान में नकल करने वाला विधार्थी और कालेज के प्रिंसिपल उनकी निगाह में एक थे। वे सबको दयनीय समझते थे, सबका काम करते थे, सबसे काम लेते थे।[75]

(2) वैधजी थे,है और रहेंगे। अंग्रेजों के जमाने में वे अंग्रेजों के लिए श्रद्धा दिखाते थे। देसी हुकूमत के दिनों में व देसी हाकिमों के लिए श्रद्धा दिखाने लगे। वे देश के पुराने सेवक थे। पिछले महायुद्ध के दिनों में, जब देश को जापान से खतरा पैदा हो गया था, उन्हों ने सुदूर्पूर्व में लड़ने केलिए बहुत-से सिपाही भरती कराये। अब जरूरत पड़ने पर रातोंरात वे अपने राजनीतिक गुट मे सैंकडों सदस्य भरती करा देते थे। पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्दकार होकर और गाव के जमींदारों में लम्बर्दार के रूप में करते थे। अब वे काओपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और कालेज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे, क्योंकि उनको पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के इन कामों को निभानेवाला कोई आदमी ही न था और वहां जितने नवयुवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे: इसलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को संभालना पड़ा था।'[76]

(3) इस देश में लड़कियां ब्याहना भी चोरी करने का बहाना हो गया है। एक रिश्वत लेता है तो दूसरा कहता है कि क्या करे बेचारा। बड़ा खानदान है, लड़कियां ब्याहनी हैं। सारी बदमाशी का तोड लड़कियो के ब्याह पर होता है।[77]

(4) 'हमारी यूनियन में गबन नहीं हुआ था, इस कारण लोग हमें सन्देह की दृष्टि से देखते थे। अब तो हम कह सकते हैं कि हम सच्चे आदमी है। ग़बन हुआ है और हमने छिपाया नहीं है। जैसा है वैसा हमने बता दिया है।'[78]

(5) अगर शहर होता और राजनीति ऊंचे दरजे की होती तो ऐसे मौके पर रामाधीन के खिलाफ़ किसी महिला की तरफ़ से पुलिस में यह रिपोर्ट आ गयी होती कि उन्होंने उसका शीलभंग करने की सक्रिय चेष्टा की, पर महिला के सक्रिय विरोध के कारण वे कुछ नहीं कर पाये और वह अपना शील समूचा-का-समूचा लिये हुए सीधे थाने तक आ गयी। पर वह देहात था जहां अभी महिलाओं के शीलभंग को राजनीतिक युद्ध में हैण्डग्रिनेड की मान्यता नहीं मिली थी।'[79]

(6) उन्होंने (गयादीन ने) कहा, “नैतिकता का नाम न लो मास्टर साहब, किसीने सुन लिया तो चालान कर देगा......” उनकी निगाह एक कोने की और चली गयी। वहां लकड़ी की एक टूटी-फ़ूटी चौकी पड़ी थी। उसकी और उँगली करते हुए गयादीन ने कहा, “नैतिकता, समझ लो कि यह चौकी है। एक कोने में पडी है। सभा-सोसायटी के वक्त इस पर चादर बिछा दी जाती है। तब बड़ी बढिया दिखती है। इस पर चढ़कर लेक्चर फ़टकार दिया जाता है। यह उसीके लिए है।”[80]

(7) उन्होंने (वैद्यजी ने) देखा कि प्रजातंत्र उनके तख्त के पास जमीन पर पंजो के बल बैठा है। उसने हाथ जोड़ रखे है। उसकी शक्ल हलवाहों-जैसी है और अंग्रेजी तो अंग्रेजी, वह शुद्ध हिन्दी भी नहीं बोल पा रहा है। फ़िर भी वह गिड़गिड़ा रहा है और वैद्यजी उसका गिड़गिड़ाना सुन रहे हैं।– वह वैद्यजी से प्रार्थना करता है कि मेरे कपड़े फ़ट गये है, मैं नंगा हो रहा हूं। इस हालत में मुझे किसीके सामने निकलते हुए शर्म लगती है, इसलिए हे वैद्य महाराज, मुझे एक साफ़-सुथरी धोती पहनने को दे दो।[81]

(8) कालिकाप्रसाद का पेशा सरकारी ग्राण्ट और कर्जे खाना था। वे सरकारी पैसे के द्वारा सरकारी पैसे के लिए जीते थे। इस पेशे में उनके तीन सहायक थे –क्षेत्रीय एम एल ए, खद्दर की पोशाक और उनका यह वाक्य, ‘अभीतो वसूली की बात ही न कीजिए। आपको कार्रवाई रोकने मे दिक्कत न हो, एसलिए मैने ऊपर भी दरख्वास्त लगा दी है।[82]

(9) और सच पूछो तो मुझे यूनिवर्सिटी मे लैक्चरर न होने का भी कोई गम नही है। वहां तो और अभी नरक है। पूरा कुम्भीपाक दिन-रात चापलूसी। कोई सरकारी बोर्ड दस रूपल्ली की ग्राण्ट देता है और फ़िर कन पकड़कर जैसी चाहे वैसी थीसिस लिखा लेता है। जिसे देखो, कोई-न-कोई रिसर्च-प्रोजेक्ट हथयाये है।कहते है कि रिसर्च कर रहे है, पर रिसर्च भी क्या, जिसका खाते हैं उसीका गाते हैं। और कहलाते क्या है। देखो, देखो,कौन–सा शब्द है? –हाँ-हाँ- याद आया- कहलाते है, बुद्धिजीवी। तो हालत अयह है कि है तो बुद्धिजीवी, पर विलायत का एक चक्कर लगाने के लिए यह साबित करना पड़ जाय कि हम अपनी बाप की

औलाद नहीं है, तो साबित कर देंगे। चौराहे पर दंस जूते मार लो, पर एक बार अमरीका भेज दो–ये है बुद्धिजीवी।'[83] (प्रिंसिपल का कथन रंगनाथ से)

(10) सभी मशीने बिगड़ी पड़ी है। सब जगह कोई-न-कोई गड़बड़ी है। जान-पहचान के सभी लोग चोट्टे है। सड़कों पर सिर्फ़ कुत्ते, बिल्लियां और सूअर घूमते है। हवा सिर्फ़ धूल उडाने के लिए चलती है। आसमान का कोई रग नही, उसका नीलापन फ़रेब है। बेवकूफ़ लोग बेवकूफ बनाने के लिए बेवकूफों की मदद से बेवकूफ़ो के खिलाफ़ बेवकूफ़ी करते हैं। घबराने की, जल्दबाजी में आत्महत्या करने की जरूरत नहीं है। बेईमानी और बेईमान सब और से सुरक्षित है। आज का दिन अड़तालीस घण्टे का है। [84]

(11) उन्हें (वैद्यजी को) इत्मीनान दिलाया गया कि वे उसी इत्मीनान से त्यागपत्र दे सकते है जिसमें सभी महापुरुष, अवसर आने पर, जनता के आगे आदर्श उपस्थित करने के उद्देश्य से देते हैं। योग्य आदमियों की कमी है, इसलिए योग्य आदमी को किसी चीज की कमी नहीं रहती। वह एक और से छूटता है तो दूसरी और से पकड़ा जाता है।[85] (तुलनीय: कर्णाटक के मुख्य-मंत्रि पर 60,000 करोड़ के घपले के लिए जब चारों और से कौआ-रोर मची तो आखिर उन्हों ने त्यागपत्र दिया, अपनी शर्तो पर, अपने आदमी को उस कुर्सी पर बिठाकर। वैधजी ने भी अपने सुपुत्र बद्री पहलवान को यूनियन का मैनेजिंग डायरेक्टर बनवा दिया था।)

(12) उसने (बेला के लिए गयादीन ने जो लड़का पसंद किए है वह लड़का) बेला के बारे में कुछ भी जानने से इनकार अकर दिया और कहा कि लड़की पढ़ी-लिखी है तो अच्छा है और नहीं है तो बहुत आच्छा है, क्योंकि मुझे उससे मास्टरी नहीं करानी है, और लड़की सुन्दर है तो अच्छा है और नहीं है तो बहुत आच्छा है, क्योंकि मुझे उसे कोठे पर नहीं बैठाना है।[86] वाह! क्या सोच है, शिक्षा और सुन्दरता के संदर्भ में, उसकी उपयोगिता और उपादेयता के संदर्भ में शायद ही ऐसी सोच कहीं मिले!

भाषाशैली:

'भाषाशैली' उपन्यास का एक महत्वपूर्ण तत्व है। उपन्यास कार को जो कुछ भी कहना है, उसका जो भी औपन्यासिक कर्म है, अंतत: उसे व्यक्त तो भाषा के माध्यम से ही किया जाता है। भाषा मनुष्य के हृदयों को भावनात्मक स्तर पर जोड़ने का काम करती है। जब हम विदेश में, या दूसरे प्रदेशों में होते हैं, तो अनुभव करते है कि समान भाषाभाषी होने के कारण दो लोगों मे नजदीकियां जल्दी स्थापित हो जाती है। युद्ध हमेशा धर्म के कारण ही होते है, यह एक मिथ है। पूर्व-पाकिस्तान और पश्चिम-पाकिस्तान का वह सन 1971 वाला युद्ध दो विधर्मियों का युद्ध नहीं था। वे तो समानधर्मा थे। हममज़हब थे, फ़िर भी युद्ध हुआ था। वस्तुत: उस युद्ध के मूल में भाषा के जरिये अपनी अस्मिता, अपनी संस्कृति की ज़डों को तलासने की वृत्ति ही शधिक बलवत्तर थी। वस्तुत: यह लड़ाई उर्दू और बँगला की थी। जो भी हो,भाषा का महत्व साहित्य की हर विधा में रहेगा। मोटे तौर पर हिन्दी में भाषिक-संरचना की दृष्टि से दो शैलियां शुरू से ही (खड़ी बोली गद्य के उदभवकाल से ही) रही है—एक आमफ़हम की भाषा, जिसमें अरबी, फ़ारसी, तुर्की, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी, ब्रज, अवधी आदि सभी भाषाओं और बोलियों के शब्द हों और दूसरी संस्कृत-बहुला, संस्कृत-तत्सम-शब्द प्रधान अलंकृत शैली। समझने के लिए इन्हें हम प्रेमचंद-शैली और प्रसाद शैली कह सकते हैं। जहा तक 'राग दरबारी' की भाषाशैली का सम्बन्ध है, उसमें कुछेक स्थानो को छोडकर प्रेमचंद–शैली को ही अंगीकृत किया गया है। पूर्ववर्ती पृष्ठो में हम निरूपित कर चुके हैं कि लेखक ने अरबी,फ़ारसी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि सभी भाषाओं से शब्द ग्रहण किए हैं। प्रिंसिपल साहब (छंगामल कालेज के प्रिंसिपल)की आवेगात्मक और आदेशात्मक अभिव्यक्तियां अवधी में ही व्यक्त हुई है कोर्ट-कचहरी की भाषा में खूब सारे अरबी-फ़ारसी (उर्दू) शब्द आये है। प्रसंगानुसार अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी लेखक ने नि:सकोच ढंग से किया है।भाषा के 'टोन' की बात यदि कही जाय, तो कह सकते है कि 'राग दरबारी' की भाषा का 'टोन' समग्रतया व्यंगात्मक है। यहां इस उपशीर्षक के अंतर्गत हम निम्नसूचित दो मुद्दों

की पड़ताल करेंगे—(क) 'राग दरबारी" की भाषा शैली की कतिपय विशेषताएं और (ख) विविध भाषाशैलियों का प्रयोग।

(क) 'राग दरबारी' की भाषाशैली की कतिपय विशेषतताए :

'राग दरबारी' की भाषाशैली की प्रमुख तीन विशेषताएं है—

1. व्यंग्यात्मकता
2. सांकेतिकता और
3. प्रतीकात्मकता
4. संदर्भ - संपन्नत्ता

अब क्रमशः इनकी चर्चा यथासंभव संक्षेप में करेंगे—

1. व्यंग्यात्मकता : 'राग दरबारी' को व्यंग्यात्मक उपन्यासों का प्रतिमान माना गया है। जिस प्रकार 'मैला आँचल' के पोर-पोर में आंचलिकता है, ठीक उसी तरह 'राग दरबारी' का पोर-पोर व्यंग्यात्मकता में पगा हुआ है। उपन्यास का क्लेवर बड़ा है। उसे 'महाकाव्यात्मकता में पगा हुआ है। उपन्यास का क्लेवर बड़ा है। उसे 'महाकाव्यात्मक उपन्यास' (Epic-Novel) कहा जा सकता है। यह पहला ऐसा उपन्यास है, जिसमें पहले वाक्य से लेकर अतिम वाक्य तक व्यंग्यात्मकता कूट-कूट कर भरी है। उसकी सपाटबयानी में भी व्यग्य है।उसकी अभिधा में भी लक्षणा और व्यजना है ।पूर्ववर्ती पृष्ठों में हमने उसकी व्यग्यात्मकता के पर्याप्त प्रमाण दिए है, अंत: यहा अलग से उनकी चर्चा आवश्यक नहीं है। व्यंग्यात्मक शब्दावली, व्यग्यात्मक कहावते और मुहावरे, व्यंग्यात्मक वाक्य, व्यंग्योक्तियो प्रभृति की चर्चा में हम उसके पर्याप्त प्रमाण दे चुके हैं।

2. सांकेतिकता : जहां व्यंग्यात्मकता होगी वहां सांकेतिकता अपने आप आ जायेगी। यह हमारा सामान्य अनुभव है कि जब-जब हम किसी पर व्यंग्य या कटाक्ष करते हैं, तो हमारी अभिधात्मक बात भी लक्षणात्मक हो जाती है और जहां लक्षणा और व्यंजा होगी वहां सांकेतिकता आयेगी ही। उपन्यास क अंत में वैद्यजी छोटू पहलवान और बद्री पहलवान को आदेश देते है कि वे मास्टर खन्ना और मास्टर मालवीय को जरा अलग लो जाएं, तो संकेत यह है कि वे उनकी

जमकर पिटाई करे, और तब तक करते रहे जब तक वे अपनी मर्जी से इस्तीफ़ा न दे दें।[87] जितने भी व्यंग्य-वाक्य उपन्यास में प्राप्त होते है उन सभी में संकेतात्मकता का गुण है। रंगनाथ जब कहता है कि 'ड्राइवर साहब, आपका गियर तो हमारे देश की हुकूमत जैसा है [88] तो अर्थ यह संकेतित होता है कि चाहे हमारे नेता देश को आगे बढ़ाने के कितने भी प्रयत्न कर लें, पर हम जितना आगे जायेंगे उतना, कई बार उससे ज्यादा पीछे आयेंगे। देश की चेतना का गियर फ़िसल-फ़िसल कर न्यूट्रल में आ जायेगा। 'आज का दिन अडतालीस घण्टे का है। [89] तो इस वाक्य के कई-कई संकेतार्थ निकलेंगे--- एक, सामान्य दिन से ज्यादा काम होगा, ज्यादा भागदौड रहेगी, दो क्या जल्दी है कोई भी काम करने की, भले और लोगों के लिए दिन चौबीस घण्टे का होगा, हमारे लिए तो वह अड़तालीस घण्टे का है, आराम से काम करेंगे, तीन, आज कुछ अनहोना होगा आदि-आदि। "वर्तमान शिक्षा-पद्धति रास्ते में पड़ी हुई कुतिया है।"[90] इस व्यंग्य-वाक्य से कई बातें निःसृत होती है, मसलन –जो कुतिया रास्ते में पड़ी है, उसे आता-जाता कोई भी लतियाता है। अभिप्राय यह कि जिसे शिक्षा कि ए बी सी डी भी न मालूम हो ऐसे लोग रात-दिन शिक्षा के बारे में अंड-बंड बकते रहते हैं और ऐसे गवारों और मूर्खों के द्व्रारा शिक्षा मे ऐसे-ऐसे प्रयोग होते है जिससे बजाय फ़ायदे के नुकसान हो रहा है। इस तरह जितने भी व्यंग्य-वाक्य और व्यग्योक्तियां है वे सब कई-कई सांकेतिक अर्थों को अपने मे समाये हुए हैं।

3. **प्रतीकात्मकता:** उपन्यासकार, और उपन्यासकार ही क्यों, कोई भी साहित्यकार, कलाकार, अपनी अभिव्यक्ति को पैनी बनाने के लिए प्रतीको का प्रयोग करते हैं। यूरोप में तो इसे लेकर 'प्रतीकवाद' (Symbolism) का एक आंदोलन या प्रवाह ही चला था। प्रतीक हमारी भाषा में इतने घुल-मिल गये हैं कि कई बार तो हमें पता ही नहीं चलता कि हम किसी प्रतीक का उपयोग कर रहे हैं। कई बार आमतौर पर कहा जाता है— "आजकल वह बड़ी सती-सावित्री बन रही है।" या 'वह अपने को राजा हरिश्चन्द्र का अवतार समझ रहा है' तो हम जाने – अनजाने प्रतीकों का प्रयोग कर रहे है। यहां 'सावित्री' और हरिश्चन्द्र' क्रमश: सती-

साध्वी स्त्री और सत्यवादी व्यक्ति के प्रतीक बनकर आये हैं। हमारे कई पौराणिक पात्र प्रतीक रूप में भाषा में प्रयुक्त हो रहे हैं। हमारे कई पौराणिक पात्र प्रतीक रूप में भाषा में प्रयुक्त हो रहे है। कुछ पंक्तियां स्मृति में कौध रही है— "कोई तुनककर बोल गया / मेरी आंखो में आ गया / तो तीसरे दर्जे का परशुरामीय अभिशाप देकर / संसार के कुरक्षेत्र के लिए उसे निकम्मा कर देता हू।"[91] सभी जानते है कि मास्टर डिग्री में यदि 'तीसरा दर्जा' मिल जाय तो व्यक्ति की कैरियर चौपट हो जाती है। उपर्युक्त उदाहरण मे 'परशुरामीय अभिशाप' और 'कुरूक्षेत्र' ये दोनों शब्द प्रतीक के अर्थ में आये हैं।

'राग दरबारी' उपन्यास में ऐसे कई शब्द,कई वाक्य, कई प्रसंग प्रतीक के रूप में व्यवहृत हुए है। उपन्यास का शीर्षक ही प्रतीकात्मक है। वैसे तो 'दरबारी राग' हमारे शास्त्रीय संगीत में इक महत्वपूर्ण राग है।परंतु यहां उसका प्रतीक के रूप में प्रयोग हुआ है। वैद्यजी की बैठक ही दरबार है और चापलूसी और चाटुकरिता ही वह राग है। आज़ादी के बाद हमारे देश के कर्णधारो ने देश की और प्रजातंत्र की जो खस्ता हालत कर दी है उसके लिए लेखक ने एक बरबस, लाचार, निहायत दयनीय, हलवाहे के प्रतीक का उपयोग किया है। वह वैद्यजी के आगे हाथ जोडकर प्रार्थना करता है कि वे उसे एक नयी धोती ला दे क्योंकि वह नगा हो रहा है और उसे बाहर निकलने मे भी शरम आ रही है।[92]

एक स्थान पर गयादीन 'नैतिकता' की बात निकलने पर लकडी की एक टूटी-फ़ूटी चौकी की और इशारा करते हुए मास्टर खन्ना और मालवीय वग़ैरह को समझाते है कि समझ लो कि 'नैतिकता' यह चौकी है। प्रसग-विशेष पर उस पर रंगीन, सुन्दर और साफ़-सुथरा कपड़ा डाल दिया जाता है। यहां पर 'चौकी' नैतिकता के प्रतीक-रूप में आयी है।[93]

उपन्यास में एक स्थान पर गयादीन की सुपुत्री बेला का जिक्र आता है। बेला अब सिनेमाई गानों में प्रेमपत्र लिखने लगी है। छत के रास्ते से अपने प्रेमी को मिलने भी जाती है। संक्षेप में अब किसी हालत में कुंवारी स्थितियों को भोगने के लिए तैयार नहीं है। गयादीन उसके लिए लड़का देख रहे है,पर बात कीमत पर

अटकी है। गयादीन सात हजार की बात करते है, पर लड़के वाले ज्यादा की मांग कर रहे हैं। इस बीच में बेला और बद्री को लेकर गांव में बात चल पड़ती है। वैद्यजी तो रिश्ता मांगने भी आ जाते है। तब गयादीन किसी भी कीमत पर उसका रिश्ता करने की ठान लेते है।इसके तुरंत बाद एक गरमायी हुई भैंस का जिक्र आता है।मास्टर खन्ना गयादीन को कहते है, 'भैस गरम हो रही है। इसका इन्तजाम करवाइए। 'गयादीन' कहते हैं कि "क्या इंतजाम करवाएं, इलाके के सारे भैसे तो बधिया हो गए। रमजानी घोसी ने भी स्थिति को भापते हुए अपने भैंसे का दाम बढ़ा दिया हैं। पहले रूपया-अठन्नी लेता था, अब सीधे दो रूपये की बात करता है। यहां 'गरमायी हुई भेंस' बेला के प्रतीक के रुप में आयी है।[94]

उपन्यास के अंत में डुगडुगी बजाने वाले मदारी और दो बन्दरों का जिक्र आया है।ये भी प्रतीकात्मक है। मदारी वैद्यजी है और बन्दर मास्टर खन्ना और मालवीय है।[95]

(4) संदर्भ-संपन्नता: श्रीलाल शुक्ल एक बहुश्रुत व बहुपठित लेखक है, अत; उनके उपन्यास में नाना विषयो के संदर्भ आने लाज़मी है। यह संदर्भ-संपन्नता उनकी भाषाशैली की एक खास विशेषता है।'राग दरबारी' में हमें हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त अंग्रेजी साहित्य, बॅगला साहित्य, अवधी का लोकसाहित्य, इतिहास, चित्रकला, पुरातत्व, पुराशास्त्र, फिल्म-जगत आदि कई-कई विषयो-क्षेत्रो के सदर्भ उपलब्ध होते है, जिससे लेखक की बहुश्रुतता का परिचय प्राप्त होता है।

(ख) विविध भाषाशैलियों का प्रयोग:

'राग दरबारी' उपन्यास मे हमें नानाविध भाषाशैलियों के प्रयोग दृष्टिगोचर होते है, जिनमें से कुछेक का उल्लेख यहां हम कर रहे हैं :

1. **व्यास-शैली:** 'व्यास' का अर्थ है विस्तार या फैलाव।जहां किसी बात या प्रसंग का वर्णन ब्यौरेवार विस्तार के साथ अनेक उदाहरणों द्वारा किया जाता है, वहां उसे ,व्यास-शैली' कहते हैं। उसमें किसी बात को प्रथमत: सूत्र रुप में कहकर फ़िर उसे पूरे विस्तार के साथ (With full details) कहने की प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है। पूर्ववर्ती पृष्ठोंमें 'परंपरा' और 'इन्सानियत' के जिक्र के बाद जो

ब्यौरेवार वर्णन हैं, उसे हम 'व्यास शैली के अंतर्गत रख सकते हैं। इसी तरह। कौडिल्ला-न्याय' से जुड़ी समग्र कथा भी इसी शैली के अंतर्गत समाविष्ट होगी। चुनावी हथकंडों के संदर्भ में जो तीन पद्धतियां दी गई है -- रामनगरवाली, नेवादावाली और महिपालपुरवाली—उनमें वर्णित कथाएं 'व्यास शैली' के ही उदाहरण है।[96]

2. समास-शैली: यह 'व्यास-शैली' का विलोम है। जहा 'व्यास-शैली' मे बात को बहला-बहला कर कहने की प्रवृत्ति रहती है, वहां 'समास-शैली' में किसी बात को सूत्ररूप में रखने की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। पूर्ववर्ती पृष्ठों में जो सूत्रात्मक वाक्य दिए गए है, उनको हम समास-शैली के भी उदाहरण कह सकते हैं। 'समास' शब्द का अर्थ ही है, समाहार करना, जोड़ना। हिन्दी या संस्कृत में एक उदाहरण मिलता है 'असूर्यपश्या'। 'असूर्यपश्या' उस भूमि या धरती को कहते हैं जहां घने जंगलो की वृक्ष-लता-राशि के कारण सूर्य की किरणें भूमिकण का स्पर्श नहीं कर पाती है। वस्तुत: यह बहुव्रीहिसमास का उदाहरण है। अत: समास-शैली में भी संक्षिप्तीकरण की प्रवृत्ति विद्यमान होती है।

3. तरंग-शैली: जिस प्रकार सरोवर या समुद्र में तरंगें आती रहती हैं, ठीक उसी प्रकार तरग-शैली में भावोंया विचारो के तरंग आते रहते हैं। इसमें रह-रह कर भाव और विचार उठते रहते है।97 'राग दरबारी' उपन्यास मे बेला का जो प्रेमपत्र है, वह इस शैली का एक अच्छा उदाहरण है।[98] पूर्ववर्ती पृष्ठो मे उसका एक अंश दिया गया है।

4. विदग्ध-शैली: जहां किसी बात को विदग्ध तरीके से रखी जाय, युक्ति-पूर्वक या चातुर्यपूर्ण ढ़ंग से रखी जाए, वहां उसे विदग्ध-शैली कहते हैं।[99] 'राग दरबारी' उपन्यास में गयादीन बेला के लिए जिस लड़के की तलाश करते हैं उसके पिताश्री न केवल बेला को देखने से इन्कार कर देते है, बल्कि क़हते है – "लड़की पढी-लिखी है तो अच्छा है और नही है तो बहुत अच्छा है, क्योकि मुझे उससे मास्टरी नहीं करानी है, और लड़की सुन्दर है तो अच्छा है और नहीं है तो बहुत अच्छा है, क्योंकि मुझे उसे कोठे पर नहीं बैठाना है।"[100] यहां पर लेखक ने

विदग्धतया उस व्यक्ति से यह कहलवाया कि उसे केवल दहेज में मिलने वाली रकम से मतलब है। सुन्दरता या शिक्षा के कारण वह अपने लड़के की कीमत जरा भी कम करना नहीं चाहता है। ऐसे तो अनेकों उदाहरण उपन्यास में मिलते है।

5. **उद्धरण-शैली:** जहां पर उपन्यासकार अपनी किसी बात के समर्थन में किसी कवि या लेखक की पंक्तियो को उद्धत करता है, वहा उसे उद्धरण शैली कहते है। अज्ञेय के उपन्यासों में अंग्रेजी या पाश्चात्य कवियो और लेखकों के कई उद्धरण मिलते हैं। 'राग दरबारी' में भी कई स्थानो पर लेखकने उद्धरण शैली का आश्रय लिया है। एक स्थान पर प्रिंसिपल साहब के व्यक्तित्व पर बात करते हुए, उनके जिद्दी स्वभाव के संदर्भ में, वैद्यजी के अलावा किसी भी व्यक्ति के सामने अपनी टेक पर अड़े रहने वाली वृत्ति के संदर्भ में और 'कोई बात नहीं', मौका आने पर समझलेंगे जैसी धमकीपूर्ण जुम्ले के बारंबार इस्तेमाल के संदर्भ मे गिरिजाकुमार माथुर की पंक्तियों को उद्धत किया है।

हमने बितायी है जिन्दगी कसाले की,
हमने परवाह कभी की न किसी...की।[101]

इस तरह के कई उदाहरण 'राग दरबारी' में मिल जाते हैं।[102]

6. **एब्सर्ड-शैली:** इस शैली का प्रयोग प्राय: चेतना-प्रवाह-शैली वाले उपन्यासो (Novels of Stream of Consciousness) मे होता है। शैलेश मटियानी कृत 'बर्फ़ गिर चुकने के बाद' इसका एक अच्छा उदाहरण है। इसमें कुछ ऐसे वाक्यों वाले परिच्छेद आते है जिनमे पारस्परिक मेल प्रथमदृष्टया नही दिखता है। 'राग दरबारी' में भी एक-दो स्थानों पर लेखक ने इसका प्रयोग किया है। यथा- सभी मशीनें बिगड़ी पड़ी है। सब जगह कोई-न-कोई गड़बड़ी है। जान-पहचान के सभी लोग चोट्टे है। सड़कों पर सिर्फ़ कुत्ते, बिल्लियां और सूअर घूमते हैं। हवा सिर्फ़ घूल उड़ाने के लिए चलती है। आसमान का कोई रंग नहीं, उसका नीलापन फ़रेब है। बेवकूफ़ लोग बेवकूफ़ी करते है। घबराने की, जल्दबाजी में आत्महत्या करने की जरुरत नहीं है। बेईमानी और बेईमान सब और से सुरक्षित है। आज का दिन अड़तालीस घण्टे का है।[103]

7. सर्फ़ाला शैली: कहीं-कहीं गुप्त-भाषा के रूप में एक विशेष प्रकार की भाषा या बोली इजाद की जाती है। जैसे कुछ लोग वाक्यों के शब्दों को उलटाकर बोलते है, 'झेमु जआ बईमुं नाजा है अर्थात 'मुझे आज मुंबई जाना है।, 'राग दरबारी' उपन्यास में ऐसी एक बोली, जिसे लेखक ने 'सर्फ़ाला बोली' का नाम दिया है प्रयुक्त हुई है। उपन्यास में जोगनाथ ज्यादातर इस बोली या शैली का प्रयोग करता हुआ श्रुतिगोचर होता है। यथा-कर्फ़ोन है सर्फ़ाला? (कौन है साला), 'मर्फ़र गर्फ़ये सफ़ाले फ़र्फ़ोली चर्फ़लानेवाले (मर गये साले गोली चलानेवाले) 'जर्फ़ोगनाथ हर्फ़ोश मे अर्फाओ(जोगनाथ होश में आओ)[104]

8. तकिया कलाम वाली शैली: हम देखते हैं कि कुछ लोगों को कुछ या कुछ जुम्ले बारबार दोहराने की आदत होती है, उसे तकिया कलाम कहा जाता है। हमारे परिचितों में एक साहब है। उनको बात-बात में 'छते' बोलने की आदत है। यह 'छते' उनका तकिया-कलाम बन चुका है।'राग दरबारी 'उपन्यास में वैद्यजी के युनियन में हुए ग़बन वाले मामले में एक सभा का आयोजन होता है, वहां पर एक 'भाषण-प्रिय' व्यक्ति पहुंच जाता है, जो वैद्यजी के विरोधी रामाधीन भीखम-खेड़वी के गुट का था। वह भाषण देने की बात करता है। तमाशाई लोगों को और क्या चाहिए? उसे मच पर खड़ा कर देते हैं। यथा-इस रिपोर्ट में—क्या नाम है उसका। गबन की बात नही कही गयी है। यहा एक लुच्चा सुपरवाइजर था—क्या नाम है उसका—रामसरुप नाम था। गबन कर दिया साले ने –क्या नाम है उसका—शहर को दो ठेले में गेहू लदवाकर भाग गया। शराब पीता था । क्या नाम हे उसका-रण्डी बाजी भी करता था। वैद्यजी तक उसके मुंह में मुंह खोसकर –क्या नाम है—बात करते थे।'[105] यहां पर उस व्यक्ति का तकिया-कलाम – "क्या नाम है उसका"-- जैसा जुम्ला है। यह भाषण और भी चलता रहता है, और कितनी ही बार उसमें यह तकिया कलाम आता है।

9. सपाटबयानी वाली शैली: जहां बात सीधे अभिधात्मक कही जाती है, पर कहीं-न-कहीं उसमे व्यग्य रहता है। ऐसी शैली को 'सपाट्बयानी' वाली शैली

कहते हैं। इधर समकालीन कविता के एक प्रमुख हस्ताक्षर सुदीप की कविता की कुछ पंक्तियां इस संदर्भ में उद्धत कर रही हूं—

आपके रामराज्य का वादा
खूब है लेकिन यह भी तो
कम से कम कान में कहिए
उसमें अपने आँगन मेंगुनगुनना सकेंगे बिना इजाजत के
दोस्तों पड़ोसियों की मुजाजपुर्सी की मनाही नहीं होगी
अपने पुरखों का श्राद्ध न कर पाएं तो कोई बात नहीं
अपने बच्चों को दुआएं देने पर पाबन्दी तो नहीं होगी'[106]

'सपाटबयानी' शैली का प्रयोग व्यंग्य में खूब होता है। 'राग दरबारी' उपन्यास की कई प्रोक्तियां सपाटबयानी के उदाहरण हैं। यहां केवल एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है—

"हमारी यूनियन में ग़बन नहीं हुआ था, इस कारण लोग हमें सन्देह की दृष्टि से देख रहे थे। अब तो हम कह सकते है कि हम सच्चे आदमी है। ग़बन हुआ है और हमने छिपाया नहीं है। जैसा है, वैसा हमने बता दिया है।"[107]

इनके अतिरिक्त किस्सागो शैली, कथोपकथन जैसी शैलिया भी प्रस्तुत उपन्यास मे मिलती है।

निष्कर्ष: अध्याय के समग्रावलोकन के पश्चात् हम निम्लिखित निष्कर्ष तक सहजतया पहुंच सकते हैं—

1. उपन्यास की प्रकृति वा रूपबन्ध व्यग्यात्मक है। अंत: उसकी भाषिक संरचना की प्रत्येक इकाई में हमें व्यंग्य के दर्शन होते हैं। व्यंग्य की भंगिमा सर्वत्र श्रुतिगोचर हो रही है।
2. उसमें 'वर्ण वक्रता' से लेकर 'प्रबंध-वक्रता' तक के विभिन्न स्तर उपलब्ध होते हैं। 'छगामल' का 'छं' वर्ण-वक्रता' का उदाहरण है तो समग्र 'राग दरबारी' उपन्यास 'प्रबंध-वक्रता' को रुपायित करता है।

3. उसमें अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत, अवधी आदि कई भाषाओं के शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग उपन्यासकार ने किया है।

4. उसमें शब्द,वाक्य, कहावतें मुहावरे, प्रोक्तियां, सभी में व्यंगलता के दर्शन होते हैं।

5. उसमें प्रयुक्त विभिन्न भाषाशैलिया भी उसे व्यंग्यात्मकता की ओर ले जाने वाली हैं।

:: सन्दर्भानुक्रम ::

1. सौराष्ट्र में अतिप्रचलित दोहा।
2. राग दरबारी : श्रीलाल शुक्ल : पृ. 6।
3. वही : पृ. 6।
4. वही : पृ. 27।
5. वही : पृ. 30।
6. वही : पृ. 80-81।
7. वही : पृ. 67।
8. वही : पृ. 146-147।
9. वही : पृ. 208।
10. वही : पृ. 81।
11. द्रष्टव्य : भाषाविज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी : पृ. 484।
12. राग दरबारी : पृ. 88।
13. भाषाविज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी : पृ. 397।
14. सूखे सेमल के वृन्तों पर : डॉ. पारूकान्त देसाई : पृ. 13।
15. राग दरबारी : पृ. 89।
16. वही : पृ. 88।
17. वही : पृ. 78।
18. वही : पृ. 322-323।
19. वही : पृ. क्रमशः 6, 10, 15।
20. समीक्षायण : डॉ. पारूकान्त देसाई : पृ. 60।
21. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 18, 24, 311।
22. समीक्षायण : पृ. 63।
23. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 29, 325, 34।
24. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 20, 20, 37, 53, 63, 71, 71, 73, 75, 76, 77, 78, 83, 88, 89, 93, 104, 124, 125, 133, 133, 133, 141,

148, 159, 159, 162, 162, 166, 173, 182, 182, 187, 189, 193, 200, 215, 226, 235, 236, 236, 266, 289, 307 ।

25. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 24, 24, 24, 28, 34, 34, 35, 51, 52, 54, 54, 54, 55, 107, 119, 119, 181, 234, 278, 281, 309, 423, 77, 89, 90, 90, 104, 112, 125, 124, 133, 132, 133, 133, 141, 141, 142, 148, 158, 159, 159, 174, 174, 174, 180, 182, 185, 224, 235, 236, 257, 271, 278, 282, 296, 303, 318, 318, 330 ।

26. सेवासदन : प्रेमचंद : पृ. 5 ।

27.

28. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 6 6 10 12 17 24 24 27 34 51 54 61 67 67 69 69 75 77 81 89 91 91 104 114 118 119 125 125 133 134 141 142 143 145 148 149 158 159 162 162 173 174 177 178 186 186 187 191 216 223 235 245 253 257 259 265 265 269 279 281 282 286 289 297 298 303 311 320 327 329 ।

29. द्रष्टव्य : राग दरबारी : पृ. 93 ।

30. उपन्यास-लेखक क्रमशः डॉ. राही मासूम रज़ा, डॉ. रामदरश मिश्र हिमांशु श्रीवास्तव, कृष्णा सोबती, जगदीशचन्द्र ।

31. 'हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास-परंपरा मे साठोत्तरी उपन्यास' डॉ. पारूकान्त देसाई : पृ. 398 ।

32. राग दरबारी : पृ. 142 ।

33. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 45, 38, 56, 251, 142 ।

34. राग दरबारी : पृ. 20, 24, 37, 43, 43, 54, 71, 83, 103, 107, 107, 118, 127, 134, 142, 142, 158, 159, 159, 182, 196, 266, 278, 287, 299, 303, 307, 318, 318, 327, 281, 408, 378 ।

35. द्रष्टव्य : शब्दों का सफ़र : पहला पड़ाव : अजित वड़नेरकर : पृ. 48 ।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY
The M S University of Baroda

36. द्रष्टव्य : चिंतनिका : डॉ. पारूकान्त देसाई : पृ. 109-110 ।

37. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 6, 5, 7, 13, 15, 14, 17, 18, 18, 24, 24, 35, 55, 43, 45, 45, 51, 51, 60, 69, 69, 71, 78, 78, 79, 93, 113, 121, 129, 129, 130, 141, 141, 141, 142, 161, 161, 167, 167, 186, 187, 187, 200, 201, 201, 203, 203, 206, 221, 223, 223, 230, 230, 250, 161, 261, 265, 283, 287, 298, 298, 299, 303, 303, 303, 319, 319, 324, 328, 328, 330 ।

38. चिंतनिका : पृ. 110 ।

39. राग दरबारी : पृ. क्रमश 5, 5, 6, 8, 8, 10, 12, 16, 16, 16, 19, 22, 23, 23, 23, 26, 27, 39, 39, 52, 57, 61, 64, 67, 67, 67, 81, 80, 98, 99, 103, 109, 116, 142, 142, 143, 143, 147, 147, 148, 154, 154, 174, 174, 174, 174, 174, 186, 187, 191, 192, 202, 203, 210, 213, 214, 216, 225, 248, 253, 272, 272, 281, 295, 295, 296, 305, 318, 319 ।

40. शब्दों का जीवन : डॉ. भोलानाथ तिवारी : पृ.

41. भाषाविज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी : पृ. 111, 112 ।

42. द्रष्टव्य : व्युत्पत्ति-शतक : डॉ. लक्ष्मण सहाय : पृ. 3-26 ।

43. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 10, 10, 10, 12, 15, 29, 30, 30, 31, 47, 47, 47, 47, 48, 48, 48, 48, 61, 67, 67, 106, 115, 119, 125, 125, 134, 155, 156, 162, 162, 162, 162, 175, 177, 177, 189, 189, 191, 196, 196, 198, 204, 204, 208, 223, 223, 233, 247, 247, 247, 247, 247, 247, 253, 254, 254, 257, 257, 257, 264, 273, 273, 285, 285, 308, 308, 320, 323, 323, 323, 330 ।

44. राग दरबारी : पृ. 48 ।

45. वही : पृ. 68 ।

46. वही : पृ. 80 ।

47. वही : पृ. 81 ।

48. वही : पृ. 81 ।

49. वही : पृ. 81 ।

50. हिन्दी मुहावरे और लोकोक्ति कोश : डॉ. बदरीनाथ कपूर : पृ. 9 ।

51. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 6, 7, 15, 29, 29, 31, 35, 34, 37, 38, 38, 51, 53, 54, 54, 55, 56, 67, 69, 69, 71, 73, 77, 77, 78, 81, 81, 81, 81, 83, 89, 89, 91, 104, 114, 118, 119, 125, 133, 133, 134, 141, 142, 145, 148, 149, 158, 159, 159, 162, 162, 162, 173, 174, 180, 182, 186, 186, 187, 191, 192, 199, 200, 214, 215, 216, 235, 235, 245, 258, 263, 281, 303, 307, 311, 315, 320, 327, 329, 330 ।

52. भाषाविज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी : पृ. 208 ।

53. विस्तार के लिए देखिए : भाषा विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी : पृ. 207-209 ।

54. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 5, 15, 18, 28, 301 ।

55. वही : पृ. क्रमशः 5, 5, 10, 15, 37 ।

56. वही : पृ. क्रमशः 29, 7, 295, 116, 134 ।

57. भाषा विज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी : पृ. 217 ।

58. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 5, 27, 75 ।

59. वही : पृ. क्रमशः 15, 30, 295 ।

60. वही : पृ. क्रमशः 324, 8, 53 ।

61. वही : पृ. क्रमशः 10, 51, 162 ।

62. राग दरबारी : वही : पृ. क्रमशः 45, 34, 258 ।

63. वही : पृ. क्रमशः 132, 13, 9 ।

64. वही : पृ. क्रमशः 295, 247, 247 ।

65. द्रष्टव्य : चिंतनिका : पृ. 92 ।

66. द्रष्टव्य : राग दरबारी : पृ. क्रमशः 6, 10, 18, 29, 49, 68, 69, 98, 100, 116, 119, 121, 142, 172, 186, 186, 200, 236, 258, 269, 276, 282, 285, 298, 303, 329 ।

67. वही : पृ. क्रमशः 21, 29, 30, 51, 69, 121, 142, 173, 275, 285, 303, 323, 327 ।

68. हिन्दी पाथेय : डॉ. मोहनलाल उपाध्याय : निर्मोही : पृ. 160-161 ।

69. द्रष्टव्य : चिंतनिका : पृ. 106 ।

70. राग दरबारी : पृ. क्रमशः 10, 21, 29, 34, 49, 55, 56, 69, 78, 98, 104, 159, 186, 196, 200, 236, 276, 282, 283, 303 ।

71. भाषाविज्ञान : डॉ. भोलानाथ तिवारी : पृ. 200 ।

72. वही : पृ. 201 ।

73. द्रष्टव्य : राग दरबारी : पृ. 81 ।

74. वही : पृ. 52-56 ।

75. राग दरबारी : पृ. 15 ।

76. वही : पृ. 29-30 ।

77. वही : पृ. 35 ।

78. वही : पृ. 37 ।

79. वही : पृ. 61 ।

80. वही : पृ. 98 ।

81. वही : पृ. 134 ।

82. वही : पृ. 146 ।

83. वही : पृ. 191 ।

84. वही : पृ. 258 ।

85. वही : पृ. 285 ।

86. वही : पृ. 295 ।

87. वही : पृ. 325 ।

88. वही : पृ. 8 ।

89. वही : पृ. 258 ।

90. वही : पृ. 10 ।

91. बिजली के फूल : डॉ. पारूकान्त देसाई : पृ.

92. राग दरबारी : पृ. 134 ।

93. वही : पृ. 98 ।

94. वही : पृ. 296-297 ।

95. वही : पृ. 330 ।

96. वही : पृ. 200-208 ।

97. समीक्षायण : पृ. 58 ।

98. राग दरबारी : पृ. 208-209 ।

99. समीक्षायण : पृ. 57 ।

100. राग दरबारी पृ. क्रमशः 295 ।

101. राग दरबारी पृ. क्रमशः 223 ।

102. राग दरबारी पृ. क्रमशः 45, 51, 54, 78, 107, 163, 177, 206, 257 ।

103. राग दरबारी पृ. 258 ।

104. वही : पृ. 62-63 ।

105. वही : पृ. 287 ।

106. समकालीनता और साहित्य : सं. राजेश जोशी : पृ. 204 ।

107. राग दरबारी : पृ. 37 ।